सफलता के रहस्य को जानें - दादी प्रकाशमणि

अखिल भारतीय सर्वधर्म सम्मेलन में देशभर से आये महामण्डलेश्वर व संतजनों के साथ वार्तालाप करते हुए दादी प्रकाशमणि। साथ हैं दादी हृदयमोहिनी।

क्या मेरा फेथ है?

अनुभवों के आधार पर हर बात में सफलता समाई हुई है। पहली बात हम खुद से पूछें कि मेरा बाबा पर और सारी नॉलेज पर पूरा-पूरा पक्का निश्चय है? निश्चय बुद्धि विजयन्ति। अगर परमात्मा में पूरा निश्चय है तो वे हमें जो नई-नई नॉलेज दे रहा है, जिसे कभी कहीं सुना नहीं, जो हम सबके लिए बिल्कुल नई है। तो खुद से पूछना है कि हर प्वाइंट में हर प्रकार से परमपिता और नॉलेज में मेरा फेथ है? या उसी निश्चय में कभी-कभी कोई-न-कोई संकल्प, जिसको संशय कहो, वह उठता है? या मुझे शिव पिता पर 100 परसेन्ट निश्चय है और उसी निश्चय से हर कदम में विजयी हैं क्योंकि सबसे पहले निश्चय है कि परमात्मा सत्य है, सत्य परमात्मा जो सुनाता है वह सब सत्य है। तो **अगर परमपिता में हमारा निश्चय है, तो हर सेकेण्ड, हर कदम में जो श्रीमत है, उसी श्रीमत पर चलते हैं? फल स्वरूप हर कदम के पीछे सफलता का अनुभव होता है? श्रीमत पर ऐसा अनुभव रहता कि हर कदम आगे बढ़ते सहज ही विजयी बनते जा रहे हैं। तो यह भी हुई सफलता।** तो सफलता का आधार, हमारा हर कदम श्रीमत पर हो। श्रीमत अनुभव कराती है कि हमारे हर कदम के पीछे पदम समाया हुआ है। इसलिए भगवान के इशारे अनुसार कदम-कदम पर सौभाग्यशाली अथवा पदमापदम भाग्यशाली हैं। हम श्रीमत में अपनी हद की मनमत न मिलावें, सदा श्रीमत को बुद्धि में धारण करें तो सामने परमात्मा रहेगा।

सफलता का आधार है- त्याग

त्याग जिसकी बुद्धि में रहता है, उसे त्याग के रिटर्न में सौ गुणा भाग्य मिलता है। **त्याग के लिए परमात्मा का पहला-पहला डायरेक्शन है कि देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों को त्याग अर्थात् भूल मामेकम याद करो। तो त्याग में अभिमान भी आता, सम्बन्ध भी आते, इच्छायें भी आती। तो जहाँ सब इच्छायें त्याग हो जातीं वहाँ सफलता ज़रूर होती है। त्याग माना इच्छा मात्रम् अविद्या। इच्छा का अर्थ ही है अज्ञान।** इच्छायें सौ प्रकार की हैं, उन सब इच्छाओं का त्याग चाहिए। यह भी इच्छा है कि मेरे सेंटर की सेवा बहुत अच्छी हो तो हम सबको बतायें वाह मेरा सेंटर... यह भी इच्छा है। अपनी सेवाओं के लिए बहुत इच्छा करते और वही इच्छा रखकर सेवा करते।

सूक्ष्म अहम को पहचानें

आप कहेंगे यह इच्छा थोड़ेही है, यह तो उमंग होता। लेकिन उमंग अलग चीज़ है, इच्छा अलग चीज़ है। यह बहुत सूक्ष्म है, इसलिए मिक्स हो जाता है। इच्छा में अहम् पैदा होता, इच्छा में देह-अभिमान आता, मैं और मेरा आता। तो यह जो बाबा कहते कि यह सेवायें तुम्हारी नहीं हैं, यह तो बाबा करन-करावनहार कराता, वह भूल जाता है। मैंने आज बहुत अच्छा भाषण किया, सबको बहुत अच्छा लगा, यह भी इच्छा है। यह भी जो सूक्ष्म आता कि हम इनसे भी आगे जाके दिखाएं, इसमें भी आगे जाऊंगी, यह करूंगी, यह करूंगी, यह है गी, गी, गी...देह-अभिमान। जैसे शिव पिता कहते, तुम भाषण करने बैठो तो परमात्मा को याद करो तो वह आपेही बुलवायेगा। परंतु मैं आज यह करूंगी, ऐसा-ऐसा बोलूंगी... यह जो `मैं' `मैं' आता, वह है इच्छा। परंतु परमात्मा को याद किया, वो मेरे साथ है, मैं निमित्त हूँ...। निमित्त समझकर चलना, यही सफलता का आधार है।

पहले है त्याग, फिर तपस्या और फिर आती है सेवा। लेकिन सेवा मेरी है या सेवा बेहद बाबा(परमात्मा) की है? मैं सेवा करती या बाबा जो श्रीमत देता, आज्ञा करता, मैं उस अनुसार सेवा करती? 'मैं-पन' आता तो यह हुई हद की सेवा, परंतु यह बाबा की सेवा है, हम निमित्त हैं तो वह है बेहद की सेवा। इसको कहा जाता है त्यागी, तपस्वी और सेवाधारी।

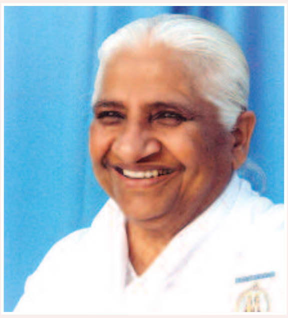

नो इच्छा-तब अच्छा

अगर इच्छा नहीं होगी तो सदैव अनुभव होगा कि शिव पिता की मेरे ऊपर बहुत ब्लैसिंग्स हैं। तो कोई इसमें परमात्मा की ब्लैसिंग समझकर चलते, कोई उनकी ब्लैसिंग को नहीं मानते। परंतु अगर लाईन क्लीयर है तो परमात्मा की एक के बदले सौ गुणा ब्लैसिंग मिलती। शिव पिता को हम मानते हैं, वह हमारा वरदाता है, वरदानों से हमें आगे बढ़ाता है। तो हम वरदानी हैं, ऐसा खुद में निश्चय हो जाये। इच्छा वाले को रहता कि मेरा शो हो, इसने बहुत अच्छा किया, यह किया, वह किया...यह है इच्छा। परंतु कहा जाता है कि तुम निमित्त हो, इसलिए निष्कामी बन सेवा करो। तो बाबा तुम्हें विशेष सफलता देगा। इच्छा वाला कभी ना-उम्मीद हो जायेगा और कभी कोई सफलता मिली तो उम्मीद में आयेगा। तो उसका बैलेंस नहीं रहता। परंतु परमात्मा का वरदान है `हे उम्मीदों के सितारे!' हे पदमापदम भाग्यशाली, सौभाग्यशाली बच्चे! यह सब हमारे लिए वरदान हैं।

सफलता के लिए त्यागी बनो

सफलता के लिए पहले त्यागी बनो। फिर दूसरा हमारी पढ़ाई है, तपस्वी बनो। तो त्यागी फिर हो तपस्वी। तपस्या ही हमारे इस ज्ञान का आधार है, क्योंकि हम योगी हैं, तपस्वी हैं। हम योगी और तपस्वियों के बीच ज़रा अंश-मात्र भी माया नहीं होनी चाहिए। कहते हैं कि **तपस्वी जब तपस्या करते हैं तो असुर आ करके विघ्न डालते हैं। यहाँ फिर व्यर्थ संकल्प-विकल्प तपस्या में बहुत सामना करते हैं। परंतु हम परमात्मा की याद में ऐसा लवलीन रहें जो व्यर्थ संकल्प बिल्कुल स्टॉप हो जाए।** व्यर्थ संकल्प जीत बनना ही हमारी तपस्या है, इससे हमारी संकल्प शक्ति बहुत-बहुत पावरफुल बनती है, फिर अशरीरी बनना सहज हो जाता है।

सच्चे अर्थ में सेवा

पहले है त्याग, फिर तपस्या और फिर आती है सेवा। लेकिन सेवा मेरी है या सेवा बेहद बाबा(परमात्मा) की है? मैं सेवा करती या बाबा जो श्रीमत देता, आज्ञा करता, मैं उस अनुसार सेवा करती? `मैं-पन' आता तो यह हुई हद की सेवा, परंतु यह बाबा की सेवा है, हम निमित्त हैं तो वह है बेहद की सेवा। इसको कहा जाता है त्यागी, तपस्वी और सेवाधारी।

दूसरा- बाबा कहते नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा। तो चेक करें कि हम हर प्रकार से सूक्ष्म नष्टोमोहा हैं? नष्टोमोहा बनने का आधार है- बाबा को सामने देखो। हमें ऐसा शिव पिता समान बनना है। तो हरेक खुद से पूछे कि हम कहाँ तक शिव पिता समान बने हैं? हमारा पुरुषार्थ ही है उनके समान सम्पन्न बनना। तो कहा जाता जो उनके समान बनते और उन्हें ही सामने रख चलते, उनकी सब इच्छायें स्वतः पूरी हो जाती हैं। उनकी प्रकृति हर तरह से दासी होती। तो **सरेन्डर माना नो इच्छा। न कोई बुद्धि में इच्छा है, न कोई व्यवहार कार्य की इच्छा है। सरेन्डर माना जो बाबा खिलावे, जो बाबा पहनावे, जहाँ बाबा रखे, उसमें ही मेरी सफलता है।**

- शेष पेज 5 पर...

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्कः भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 3rd Aug 2016
संपादकः ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशकः ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।

ओम शान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 17 अंक-10 अगस्त-II, 2016 (पाक्षिक) माउण्ट आबू 8.00

आध्यात्मिक जीवन की मशाल दादी प्रकाशमणि

“दादी और उनके द्वारा मिली हुई शिक्षायें एक चित्रफीती की तरह एक-एक कर अंतर्दृष्टि के आगे सरकती जाती हैं। वो हमारी यादों के बगीचे के फूलों को नई सुंदरता और खुशबू से भर देती हैं। महानता के आसमान को छूने के बावजूद भी अपने अंदर के इंसानी जज़्बे को आपने सदा कायम रखा। आपकी इंसानियत के विशाल वृक्ष की छाया से कोई वंचित नहीं रहा। कुशल प्रशासिका, आदर्श टीचर, सभी की प्रेरणास्रोत, ममतामयी माँ, पालनहार पिता, अपनी दूरदृष्टि से यज्ञ को आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचाने वाली आप निश्चय की महामेरू थीं। किसी को हँसाकर खुद खिलखिलाते हुए हँसना आपकी आकर्षक छवि को निखार देता था। उस समय भी लोग आपकी एक दृष्टि पाने को आतुर होते थे और आज भी लोग उसी दृष्टि के लिए प्रकाश स्तम्भ पर लम्बी कतार में करबद्ध होकर खड़े होते हैं। प्रकाश स्तम्भ बनकर दादी प्रकाशमणि आज भी हमारे साथ और सम्मुख हैं। आपके रुहानी जीवन और इंसानी जज़्बे को शत् शत् नमन।”

दादी के बारे में जब लिखने बैठते हैं तो शब्द कम पड़ जाते हैं। यूँ तो दादी जी का जीवन एक खुली किताब की तरह रहा। फिर भी हरेक के पास दादी जी के साथ के खूबसूरत लम्हें अपने-अपने हैं। दादी जी ने जिसके साथ जो पल बिताया वो आज भी सबने अपने ख्यालों में संजो कर रखा है। प्यार और ममता से ओत-प्रोत रूहानी दृष्टिपात दादी जी ने जिनपर किये हैं वे आज भी बाबा के यज्ञ के विशाल कार्य में मददगार हैं।

दादी जी का जीवन ही यज्ञ

दादी जी का पूरा जीवन ही यज्ञ था। जिसमें आहूति भी स्वयं, यज्ञ कुंड भी स्वयं और तपाना भी खुद को, ये दादी का मूल स्वभाव था। परमात्मा ने यज्ञ रचा, लेकिन उस यज्ञ की प्रथम ब्राह्मणी कार्यकर्ता दादी प्रकाशमणि जी ही थीं जिन्होंने यज्ञ की मर्यादा को परमात्म मर्यादा में बांध कर रखा। दादी आज भले हमारे साथ साकार में न हों, लेकिन एक पल भी नहीं लगता कि वे हमारे साथ नहीं हैं। आज हर कोई दादी के पदचिन्हों पर चलकर अपनी राह को आसान बना रहा है।

वे पारसमणि थीं

दादी जी को यदि हम पारसमणि की उपाधि दें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। अक्सर उनसे मिलने के बाद ऐसा महसूस होता था कि हमारे अंदर एक नई ऊर्जा का संचार हो रहा है। हम अपने को मूल्यवान कीमती सोना समझने लग जाते थे। वो समय बीता है, लेकिन आज भी उन क्षणों को सभी ने मूल्यवान समझकर संजोये रखा है।

आत्मविश्लेषण करने की घड़ी

इस बार हम उनका नौवाँ अव्यक्त दिवस मना रहे हैं, तो यह घड़ी हमारे लिए केवल दादी जी को याद करने की ही नहीं, अपितु अपना आत्म-विश्लेषण करने की है। स्वयं को शान्ति की गहराई में ले जाकर अपनी विशेषताओं को दादी की विशेषताओं के साथ जोड़कर देखना है कि कहाँ कमी है जिसे हमें बदलना है। दादी जी के गुण और विशेषताओं का वर्णन करते हुए हमारी जुबान थकती नहीं है। अगर हम उनके जैसा बन जाते हैं तो यही दादी जी को सच्ची खुशी दिलाने वाली हमारी श्रेष्ठ स्मृतियाँ होंगी।

मानवता के सही अर्थ में दादी जी

दादीजी ने महानता के आसमान को छू लेने के बावजूद अपने अंदर के इंसानी जज़्बे को सदा कायम रखा। एक सामान्य व्यक्ति या मानव के रूप में दादी जी को जब हम देखते हैं तो इंसानियत और मानवता का अर्थ समझ में आने लगता है। दादी जी हरेक छोटे-बड़े साधारण से साधारण व्यक्ति का खास ध्यान रखती थीं। खासकर बूढ़ी माताओं को विशेष एक-एक को अपने पास बुलाकर उनके आरामदायक आवास-निवास, और स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ कर उन्हें सुविधा दिलाती थीं।

सुनी को अनसुनी करना

दादी जी ने कभी भी किसी के द्वारा कही-सुनी बातों पर विश्वास कर किसी भी आत्मा के प्रति अपना मत नहीं बनाया और उस व्यक्ति को उस नज़र से नहीं देखा। चाहे आबू निवासी हो या यज्ञ का कोई नौकर, हरेक के अच्छे-बुरे समय में दादी जी को उन्होंने अपने साथ खड़ा महसूस किया। जिस पर किसी की भी नज़र नहीं पड़ती थी, उसपर दादी जी की नज़र पड़ती थी। दादी जी के इंसानी जज़्बे के विशाल वृक्ष की छाया से कोई भी वंचित नहीं रहा।

सम्पूर्ण व्यक्तित्व

दादीजी को एक कुशल प्रशासिका, आदर्श टीचर, सभी की प्रेरणास्रोत, ममतामयी माँ, पालनहार पिता, अपनी दूरदृष्टि से यज्ञ को आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचाने वाली निश्चय की सुमेरू के रूप में हर किसी ने देखा है। परंतु एक आदर्श विद्यार्थी का उनका रूप भी हम अनदेखा नहीं कर सकते। उन्होंने एक सफल प्रशासिका के साथ आदर्श विद्यार्थी की भूमिका को भी बखूबी निभाया। 80 साल के जीवन में भी दादी जी एक प्रखर व्यक्तित्व के रूप में जीती रहीं।

- शेष पेज 5 पर...

दूरांदेशी दिव्य प्रभा 'दादी'

जिस प्रकार आसमान के तारों में भी कुछ तारों का विशेष मान होता है क्योंकि वे विशेष समय पर निकलते हैं। ठीक उसी प्रकार इस जगत को रोशनी देने हेतु कुछ दिव्य सितारे समय प्रति समय खुदा का पैगाम लेकर धरती पर दिव्य जन्म लेते ही हैं। उस दिव्य सितारे में एक नाम दिव्य आभामण्डल लिये हमारी दादी प्रकाशमणि जी का भी है जो अपने महान कर्त्तव्य के द्वारा दुनिया में असंख्य लोगों के जीवन में रोशनी भरने के निमित्त बनीं। मैंने दादी के सानिध्य में करीब पच्चीस वर्ष रह कर जो देखा, समझा, उस अनुभव को आपके साथ बांटने की कोशिश करता हूँ।

जैसे ही अगस्त मास आता, दादी जी के सानिध्य में बिताए यादों की तस्वीरें मानस पटल पर आने लग जातीं। सभी ब्रह्मावत्सों की श्रेष्ठ पालना व हरेक को आगे बढ़ाना जैसे कि दादीजी की स्वाभाविक प्रवृत्ति थी। बात तब की है जब मैं शुरु-शुरु में टोली डिपार्टमेंट में सेवारत था, तब दादीजी का वहाँ रोज़ नास्ते के बाद आना और बड़े प्यार से पूछना कि आज अमृतवेला किया! आज की मुरली सुनी! अच्छा बताओ कि आज बाबा की कौन सी बात आपको अच्छी लगी! और इतना कहते हुए दादी जी बहुत स्नेह भरी दृष्टि देकर वहाँ से जाती थीं। ये जैसे रोज़ का सिलसिला था। वो लम्हा आज भी नयनों के सामने आ जाता है।

- ब्र. कु. गंगाधर

एक बार की बात है, जब जिज्ञासुओं की संख्या बढ़ी तो पांडव भवन का विस्तार करने के बारे में सोचा गया। अचानक ही ज्ञानसरोवर की ज़मीन हमें मिल गई। अब जबकि उसमें निर्माण कार्य करने की बात आई तो दादीजी ने मधुबन के सभी समर्पित भाइयों की क्लास कराकर पूछा कि ज्ञानसरोवर के निर्माण की सेवा में कौन जायेगा? क्योंकि किसी को भी इतने बड़े प्रोजेक्ट पर काम करने का न तो अनुभव था और न ही किसी ने इस तरह से उस समय सोचा था। लेकिन बाबा ने कहा था तो दादी जी ने इस बारे में सोचा और ये बातें आरंभ हुईं। ऐसे में रोज़ की तरह दादीजी का उस वक्त पर आना होता था तो दादी जी ने कहा कि आपको एक नई सेवा पर जाना है। ऐसे ही 15-20 दिन दादी जी का रोज़ आना और दोहराना कि मैं आपको नई सेवा दूंगी...एक बार दादी जी ने फिर यही बात कही तो मैंने दादी जी से कहा कि आप नि:संकोच बताइये। तब दादीजी ने कहा कि आपको थोड़ा समय ज्ञानसरोवर के निर्माण मे सारी व्यवस्था को देखना होगा। उस समय पर संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर भाई ने भी दादी जी को कहा कि ये योग्य है, ये सेवाओं को अच्छी तरह से सम्भालेगा। फिर तो दादीजी के साथ अकाउंट और यज्ञ कारोबार के संबंध में रोज़ मिलना और दादीजी का प्यार और पालना व शिक्षा मेरे लिए तो बहुत ही सौभाग्य की बात हो गई।

दादी की प्रशासनिक कला बड़ी ही निराली थी। दादी प्यार युक्त शासन का बेजोड़ मिसाल थीं। दादी प्यार देकर ऐसा उमंग-उत्साह भर देती कि जिससे हम हज़ार गुणा ज़्यादा शक्ति से काम करते थे। ज्ञानसरोवर प्रोजेक्ट को समय पर पूरा करने और उसके अंदर आने वाले खर्च के लिए दादी बड़े ही उमंग-उत्साह से सबसे भण्डारी को भरपूर कराती थीं। यज्ञ के इस ज्ञानसरोवर के विशाल प्रोजेक्ट को समयावधि के अंदर ही पूरा कर देना यही दादी जी का लक्ष्य था। आज भी वे बातें, उनकी यादें जैसे मस्तिष्क में तरोताज़ा ही हैं।

दादीजी बड़ी इकोनॉमी और एक्यूरेसी से कार्य करती और करवाती थीं। मैंने देखा कि दादी जी कोई चीज़ वेस्ट नहीं करने देती थीं और एक-एक पाई यज्ञ में लगे इसका पूरा ध्यान रखती थीं। ऐसे महान व्यक्तियों के साथ रहना भी अहो सौभाग्य होता है। इतने सारे कार्य करते भी दादीजी का जीवन बिल्कुल लाइट रहता था। सदा हँसता मुस्कराता चेहरा और सरल जीवन सबके लिए आदर्श और सबके जीवन को सुकून देने वाला प्रतीत होता था। इतनी ज़िम्मेवारी होते भी दादी का अपने पुरुषार्थ और पढ़ाई पर गहरा अटेंशन रहता था। दादी जी साकार बाबा का ही एक रूप थीं। जैसे साकार बाबा ने किया वैसा ही दादी जी भी करती थीं। उनके कदमों पर चलना उनके लिए हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

दादी कर्मातीत बनने की प्रेरणास्त्रोत

हमारी प्यारी मीठी दादी प्रकाशमणि बहुत ही निर्मल स्वभाव की थीं। उन्होंने अपने नाम के सदृश्य ही महान आचरण को प्रत्यक्ष किया। अपने निमित्त भाव तथा निर्माणता के गुण से सेवा कर विश्व में ईश्वरीय कुल का नाम बाला किया। सबकी मीठी-मीठी प्यारी दादी ने बाबा के बच्चों को दिल से पालना दी। वे सरलता और स्नेह की मूरत बन सर्व भाई-बहनों पर अपनापन उड़ेलती रहीं।

दादी जी की रुहानियत और रहम से भरपूर मीठी दृष्टि, उनकी निश्छल मुस्कान और मधुर बोल हर एक में नया उमंग, उत्साह भर देते। दादी जी के सामने जो भी आता उसे अपने सभी प्रश्नों का हल मिल जाता, वह संतुष्ट और प्रसन्न होकर दिल ही दिल में दादीजी को दुआएं देता। दादीजी ने मुख से शिक्षाएँ बहुत कम दीं, उनका जीवन ही शिक्षा स्वरूप था, सदा हर कर्म करके सिखाया। सबको अपने से आगे रखकर दिल से रिगार्ड दिया। जब कोई दादीजी की महिमा करता तो दादीजी सदा यही कहतीं-यह बाबा का यज्ञ है, करन-करावनहार बाबा है, बाबा ही हमारे साथ है, वही करा रहा है, हम सब तो बाबा की कठपुतलियाँ हैं। कोई भूल करके भी आता तो भी वह क्षमा की मूर्ति बनकर उसे कहतीं, अच्छा अब से इस बात को भुला दो, आगे के लिए नहीं करना। दादी जी परमात्मा पिता की हर श्रीमत पर चलने की प्रेरणा देतीं। उनकी पालना, मधुर शिक्षाएँ हर एक ब्रह्मा वत्स के रग-रग में समाई हुई हैं।

जब हम कराची में थे तो प्यारे बाबा उनको ईश्वरीय सेवा के लिए कभी कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में ईश्वरीय संदेश देते भेजते थे, कभी महात्मा गांधी को संदेश भेजने का निर्देश देते थे। दादीजी बड़ी तत्परता से इन सभी सेवाकार्यों को सम्पन्न करती थीं। वे बाबा के निर्देश, श्रीमत तथा इशारों को तुरंत पकड़ पूरा कर दिखाती थीं।

जब हम आबू में आए तो स्थान, वातावरण, परिस्थितियाँ बदलने के कारण भिन्न-भिन्न बातें परीक्षा के रूप में सामने आईं, पर दादी जी को हर परिस्थिति में

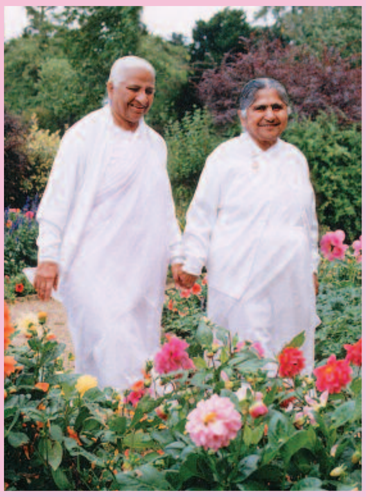

अचल-अडोल देखा। कभी उनको व्यर्थ संकल्प-बोल में नहीं देखा। सेवा के क्षेत्र में भी उनके जहाँ-जहाँ कदम पड़े, वहाँ-वहाँ स्थापना का नया इतिहास रचा गया। प्यारे ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने के पश्चात् संगठन के किले को मज़बूत बनाया। सभी को धैर्य, आशा और उमंग का पाठ पढ़ाया। यज्ञ परिवार में दिल से दिल मिलाने में और दिलाराम भगवान से दिल का प्यार पाने में प्रेरणाएं भरीं। दादी के मुरली सुनाने से साकार बाबा की भासना मिलती थी।

सन् 1977 में दादी लंदन में हमारे पास आईं। वहाँ ठण्ड बहुत होती है, मैं अमृतवेला कमरे में ही योग में बैठ गई। दादी ने इशारा दिया, बाबा के कमरे में चलो ना, तब से लेकर मैंने निरंतर ऐसी आदत बना ली है। दादी ने ही वहाँ ट्रैफिक कंट्रोल प्रारंभ करने का इशारा दिया। जब दादी विदेश के दौरे पर आती थीं, मुझे यही भासना आती थी कि दादी नहीं, स्वयं बाबा ही आए हैं।

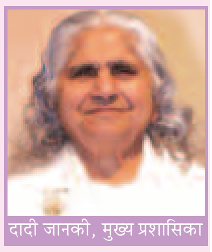
दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

डबल विदेशी भाई-बहनों को देखकर दादी हमेशा ही कहती थीं कि आप पूर्वजन्म में तो भारत में ही थे, इस अंतिम जन्म में, ईश्वरीय सेवार्थ आप इन भिन्न-भिन्न स्थानों पर, भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में आ गये हैं। दादी की नैचुरल रुहानियत, उनका ईश्वरीय प्रेम और कल्प पहले की स्मृति पक्की कराने की विधि बड़ी प्रभावशाली थी। वे पहली झलक में ही किसी भी आत्मा में इतना अपनापन भर देती थीं कि दूरी या अनजानेपन का भान मिट जाता था। दादीजी का जब सवास्थ्य ठीक नहीं था तब भी उनका मुस्कराता चेहरा देख, कर्मातीत स्थिति की प्रेरणा मिलती रही। चेहरे पर ज़रा भी दु:ख-चिंता की लहर नहीं दिखाई दी। जैसा बाबा हमें बनाना चाहता है, वो सबूत देखा। वे याद में भी लवलीन रहती थीं, बेहद सेवा को भी सामने रखती थीं और सर्व का सहयोग लेने की भी बड़ी सुंदर युक्ति उनके कर्मों से देखने को मिलती थी। बाबा की हर आज्ञा का पालन करते-करते दादी, बाप समान सबकी प्रेरणास्त्रोत बन गई। ऐसी दादीजी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके विशेष गुण निमित्त भाव, निर्मान एवं निर्मल स्वभाव को हम भी प्रैक्टिकल अपने जीवन में धारण करें। जिस प्रकार दादीजी ने अपने तीव्र पुरुषार्थ से सम्पूर्ण पवित्र फरिश्ता स्थिति को प्राप्त किया, हम भी उनका अनुसरण करें।

दादी देहातीत, कर्मातीत थीं

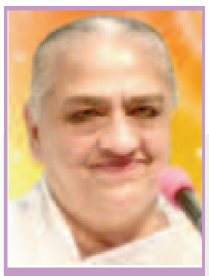
दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

जिस प्रकार बाबा के पास कोई यदि हिम्मत करके चला जाता था तो बाबा उसको बड़े प्यार से बिठाते थे और टोली खिलाते थे। उसी तरह दादी जी के पास भी जब कोई आता था तो दादी जी बड़े प्यार से उससे बात करती थीं। दादी जी कभी किसी की गलती याद नहीं दिलाती थीं। गलती करने वाला स्वयं ही अपने आपको इतना अहसास दिलाता था कि वो भविष्य में उस भूल को कभी नहीं दोहराएगा। यदि किसी छोटी बहन ने दादी जी को सुनाया कि आज मुझे बहुत रोना आया, फीलिंग आई, तो दादी कहती थीं कि कोई बात नहीं, आप छोटे हैं ना और वो बड़ी हैं, तो आज आप थोड़ी देर के लिए खुद को बाबा के साथ रखकर देखो कि आपको कैसा लगता है। दादी जी ऐसे प्यार से छोटी-छोटी बातें करके बहलाती थीं लेकिन उस बड़ी बहन को कभी उलहना नहीं दी कि तुमने ऐसा क्यों कहा। उसे बहुत प्यार देकर उसके मन को ठीक कर देती थीं। दादी जी क्लास भी कराती थीं और सब कायदे कानून भी समझाती थीं। लेकिन व्यक्तिगत मिलन में सीधा ऐसे नहीं कहती थीं कि तुमने ऐसा किया। दादी कहती थीं कि बाबा ने कहा है कि जीवन भल चला जाए पर खुशी न जाए। हमारी दादी जी सबके दिल की प्यारी और अति न्यारी, सर्व के दिलों में प्यार की, रहम की और सहयोग की छाप लगाने वाली सर्वस्नेही थीं। दादी हम सभी ब्राह्मणों के दिलों में समाई हुई हैं। दादी देहातीत अवस्था को प्राप्त कर चुकी थीं, इसलिए उन्हें बीमार होते भी सदा शांत व हर्षित देखा। इसलिए उन्हें दु:ख का रिंचक मात्र भी छू नहीं पाया, ये कमाल हम सभी महसूस करते थे। दादी सभी को शिक्षा देती थीं कि पेशेन्ट होते हुए पेशेन्स की स्थिति में रहना क्या होता है। दु:ख की लहर तो स्वप्न मात्र भी नहीं थी, क्योंकि ब्राह्मण जन्म से ही दादी ने पुरुषार्थ में कोई कमी नहीं की। दादी हमेशा कर्मातीत अवस्था की धुन लगाई हुई थीं। बाबा ने भी इसलिए कहा था कि ये मेरी एकदम सहयोगी, स्नेही और समान बच्ची है, उसकी दिल रखनी ही थी। वे सदा निर्विघ्न, स्वमानधारी, सम्मानधारी मूरत होने के कारण किसी भी विघ्न के वश नहीं हुईं। सदा विजयी रहीं। दादी जी के साथ बिताया हुआ हर एक क्षण मधुर स्मृतियों से भरा हुआ है। वे कोई बात बोलती थीं और थोड़ी देर बाद हमने देखा कि वे साइलेंस में चली जाती थीं। जब दादी से कोई कहता कि दादी आपने ये काम करवाया तो दादी थोड़ी देर तक तो सुनती रहती थीं, उसके थोड़ी देर बाद अंगुली ऊपर इशारा करके कहती थीं कि ये काम बाबा ने कराया। करनकरावनहार बाबा है, मैं तो निमित्त हूँ। दादी जी सबकी विशेषताओं का वर्णन बहुत अच्छी तरीके से करती थीं। जब कोई भी पार्टी आती थी बाबा से मिलन मनाने तो वे उस पार्टी के लिए स्पेशल इंतज़ाम कराती थीं, उनके लिए पूछती थीं कि आज भंडारे में क्या बना है, उनके हिसाब से अलग-अलग बाबा के भोग बनवाती थीं। हमें भी उनका बहुत रिगार्ड है, हम उनके अंग-संग रहे। हमें उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला। दादी जी हमारे बीच में अपनी शिक्षाओं के माध्यम से आज भी उपस्थित हैं और सदा आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रही हैं।

जो भगवान को भी पसंद हैं...

- राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू

जिनकी मुस्कान अनेकों के कष्ट हर लेती थी, जिनकी दृष्टि पाने के लिए लोगों के कदम रुक जाते थे, जिनके सफल प्रशासन को देख सभी प्रशासनिक अधिकारी उनसे यह कला सीखना चाहते थे, जिनकी पवित्रता व सरलता पर स्वयं भगवान भी बलिहार जाते थे, जिन्होंने अनेकों को जीवन दान दिया, जिन्होंने प्यार देकर अनेकों को जीना सिखाया - ऐसी थी महान दादी प्रकाशमणि।

जिन्होंने सम्पूर्ण पवित्रता को धारण करके अपना सर्वस्व ईश्वरीय कार्य में स्वाहा कर दिया था। 25 अगस्त 2007 को वे अपना नश्वर देह त्यागकर महान परमात्म कार्य के लिए अन्यत्र चली गईं।

यूँ तो इस धरा पर अनेक महानात्माओं का अविर्भाव हुआ और होता रहेगा, परंतु वे एक ऐसी महानात्मा थीं जिन्होंने अनेकों को महान बनाया, लाखों लोगों को प्रभु-मिलन कराया और परमात्मा के महान कार्य का सफलता व कुशलता पूर्वक संचालन किया। आज भी प्रतिदिन अनेकों के मानस पटल पर उनकी छवि उभर आती है और 25 अगस्त को तो सारा ब्राह्मण परिवार उनके प्रेम व अपनेपन को स्मरण करके भावविभोर हो जाता है। उनकी याद में निर्मित प्रकाश-स्तम्भ प्रतिदिन असंख्य ब्राह्मणों को योग की दिव्य अनुभूतियाँ कराता है।

कुशल प्रशासक

कुशल प्रशासक के साथ वे समस्त ब्राह्मण परिवार की स्नेहमयी दादी भी थीं। आज उनकी अनुपस्थिति विशाल ब्राह्मण परिवार में एक रिक्तता का आभास कराती है। वे निर्मल, निष्काम व आत्मिक प्रेम की प्रतिमूर्ति थीं। प्यार बांटना उनका प्रमुख कर्त्तव्य था। जब लोगों से गलती भी हो जाती थी तो वे प्यार का प्रसाद देना नहीं भूलती थीं। उनकी शिक्षाओं में भी कल्याण का भाव व प्यार समाया होता था। वे चाहती थीं कि भगवान का ये परिवार पवित्रता व प्रेम से भरपूर हो। लगभग 20 वर्ष पूर्व पाण्डव भवन में महामण्डलेश्वरों का एक धर्म सम्मेलन रखा गया था जिसमें अनेक संत-महानात्माओं ने हिस्सा लिया। दादीजी ने सभी को अपने पावन प्रेम में बांध लिया था। विरोधी सहयोगी बन गये और ग्लानि करने वाले प्रशंसक बन गये। एक प्रसिद्ध महामण्डलेश्वर ने तो मंच से भरी सभा में कह दिया कि मैं तो पूरा जीवन बाबा को व दादी को गाली ही देता आया हूँ। आज मुझे पता लगा कि वे कितनी महान हैं। उन्होंने अपना अनुभव सुनाते हुए दिल को स्पर्श करने वाली बात कही कि आज सवेरे जब दादीजी हमें सारे आश्रम में घुमा रही थीं तो मैंने दादीजी का हाथ स्पर्श किया और मैं नतमस्तक हो गया दादी जी के पवित्र वायब्रेशन्स को महसूस करके। ऐसी पवित्र आत्मा को इस धरा पर ढूंढ़ना भी असंभव है। आज से मैं दादी का भाई हूँ और दादी का जब भी बुलावा होगा, मैं दौड़ा चला आऊंगा। जितनी ग्लानि आज तक मैंने की है, अब उससे सौ गुणा प्रशंसा के पुष्प चढ़ाऊंगा। उन्हें इस तरह समर्पित होता देख, सभी धर्म धुरंधर नतमस्तक हो गये। ऐसी थीं ब्राह्मण परिवार की आत्मा दादी प्रकाशमणि।

प्रेम की देवी

बहुत वर्ष पहले की बात है। हमारा ये रूद्र ज्ञान यज्ञ बहुत छोटा था। प्रथम बार 45 पत्रकार हमारे एक छोटे से सम्मेलन में आये। हिस्ट्री हॉल में दादीजी ने शब्दों से उनका इतना भावपूर्ण सत्कार किया कि वे मंत्रमुग्ध हो गये, उनकी यात्रा की थकान उतर गई, उन्हें लगा कि दादी तो हमारी है और अगले ही दिन भारत के अनेक अखबारों में छपा- 'प्रेम की देवी - दादी प्रकाशमणि'। हम भोजनालय में सेवारत थे। हम छोटे थे, हमें भोजन बनाना नहीं आता था। वे प्रतिदिन पाँच बार किचन में आती थीं। हमें स्नेह देती थीं, पूछती थीं कि आज क्या बनाया है, भोजन देखती थीं व चखती थीं। कुछ सिखाना होता था तो अति स्नेह से व सिखाने की भावना से सिखती थीं। हमसे गलती होती थी तो वे हमें डांटती नहीं थीं। हँसते-हँसते कहती थीं - आज तो ये डालना भूल ही गये। हम कभी-कभी नुकसान भी कर देते थे, परंतु हमें समझाते हुए इतना हल्का कर देती थीं जो हम उस नुकसान की भरपाई में लग जाते थे।

मुरली में रस भर देती थीं

हमने अत्यधिक सुख उस समय प्रतिदिन पाया, जब वे सवेरे भगवान के महावाक्य (मुरली) सुनाती थीं। उन्हें ये वरदान था। वे मुरली में रस भर देती थीं। सभा में परम आनंद की लहर छा जाती थी। हमारा वो एक घण्टा जैसे कि पावरफुल योग में बीतता था।

चलता-फिरता फरितश्ता थी

वे चलता-फिरता फरिश्ता थीं। प्रारंभ में वे यज्ञ के सभी विभागों में जाती थीं, उन्हें अपनापन देती थीं, सबसे पूछती थीं - कुछ चाहिए। उनके ये शब्द सुनकर सबकी चाहना ही लोप हो जाती थी। सभी आश्चर्यवत होकर उन्हें निहारने लगते थे। जब वे बीस हज़ार की सभा में पूछती थीं - बोलो क्या खाआगे, आइसक्रीम खाओगे? सभी उनकी उदारता व अपनेपन के समक्ष सिर झुका देते थे। सचमुच वे ही योग्य पात्र थीं इस महान आत्माओं के विशाल परिवार की मुखिया बनने के।

भगवान स्वयं उन्हें न केवल प्यार करते हैं बल्कि उन्हें बहुत सम्मान देते हैं

लोग तो भगवान को प्यार करते हैं। अनेक ब्रह्मावत्स भगवान का प्यार पाने के इंतज़ार में रहते हैं, परंतु हमने देखा, भगवान स्वयं उन्हें न केवल प्यार करते हैं बल्कि उन्हें बहुत सम्मान देते हैं। नि:संदेह दादीजी भी श्रेष्ठ योगी थीं, परमात्म-प्यार में मगन रहने वाली थीं, परंतु बाबा का उनसे मिलन देखकर 'अबू मिन आदम' की कहानी मानस पटल पर उभर आती थी। सुना होगा आपने - अबू के स्वप्न में एक फरिश्ता आया, जिसके हाथ में एक लिस्ट थी। अबू ने पूछा, ये क्या है? फरिश्ते ने उत्तर दिया, ये उन लोगों की लिस्ट है जो भगवान को बहुत प्यार करते हैं। अबू ने पूछा, इसमें मेरा नाम कहाँ है? 'सबसे अंत में' - यह कहकर फरिश्ता लोप हो गया। दूसरी रात एक लिस्ट के साथ फरिश्ता पुन: प्रकट हुआ और अबू ने पुन: पूछा, आज किनकी लिस्ट है? फरिश्ते ने फरमाया कि 'ये लिस्ट उनकी है जिन्हें भगवान बहुत प्यार करता है, इसमें सबसे ऊपर आपका ही नाम है', यह कहकर फरिश्ता अदृश्य हो गया। यह सुनकर अबू प्रभु-प्रेम में मग्न हो गया।

बाबा ने समस्त शक्तियाँ दे दी थी

ये वृत्तांत पूर्णतया सत्य है दादी प्रकाशमणि के लिए। क्यों उन्हें भगवान इतना प्यार करता था जो अव्यक्त होते समय बाबा ने उनका हाथ पकड़कर उन्हें अपनी समस्त शक्तियाँ दे दी थी। क्योंकि वे निर्मल थीं, वे अनासक्त थीं, वे त्यागी व परोपकारी थीं। उनका चित्त सभी के लिए शुभ-भावनाओं से भरा था, वे निर्विकारी थीं। उन्होंने भगवान द्वारा रचित रूद्र यज्ञ को सफल बनाया था, उसमें आने वाले विघ्नों को समाप्त किया था। सचमुच वे यज्ञ रक्षक थीं। वे चाहती थीं कि प्रत्येक यज्ञ-वत्स संतुष्ट रहे, योगी बनकर रहे, व्यर्थ से मुक्त रहे। सब एक-दूसरे को सुख देते रहें, संतुष्ट करते रहें। सब यज्ञ सेवा से अपना भाग्य चमकाते रहें। हम यज्ञ-वत्स उनकी इन शुभ-कामनाओं को पूर्ण करके उनकी श्रेष्ठ पालना का रिटर्न देंगे।

हे विश्व की आधारमूर्त, आपको कोटि-कोटि नमन्! हे जहान के नूर, आपको बारंबार नमन्। हे असंख्य आत्माओं के दिल के दीपक आपको शत् शत् नमन्। सारा विश्व आपका ऋणी है। हम इस पुण्य स्मृति दिवस पर आपको श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं। हम अवश्य ही आप समान सच्चाई व निरहंकारिता को धारण करते हुए आपके सपनों को साकार करेंगे।

महान यज्ञ की अगुआ दादी...

वह मेधा की अविरल धारा थीं। जैसा कि हमारे यज्ञ का नाम शोभायमान है, **राजस्व अश्वमेध अविनाशी रूद्र गीता ज्ञान यज्ञ।** इस यज्ञ की अगुआई एक ऐसी विदुषी सशक्त नारी जिनकी अध्यात्म प्रज्ञा प्रखर थी, ने की। कहा भी जाता है कि नारी में विद्यमान शक्ति को आध्यात्मिकता द्वारा पुनर्जागृत किया जाये तो वह समाज में क्रान्ति ला सकती है। विश्व में नारी शक्ति को संगठित कर एक विशाल कार्य में सहयोगी बना एक स्वर्णिम संसार की रचना में उनकी योग्यताओं को लगाकर दादी ने मानव मन पर एक अमिट छाप छोड़ी है।

दादी जी को ऐसे ही रत्नप्रभा का सम्मान नहीं दिया गया। उन्होंने बाल्यावस्था से ही स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन की संकल्पना के साथ कार्य किया। नारी की अद्भुत गरिमा विश्वव्यापी बनाने वाली दादी दिव्य बुद्धि व मेधा की अद्भुत मिसाल बनकर उभरीं। उनके लिए ही एक बात दिल से निकलती है कि इतिहास वही लिखते हैं जिनकी मेधा सर्वोच्च व परमात्मा के समीप होती है, साधारण लोग तो सिर्फ उसे पढ़ते हैं। ऐसी दादी को कोई क्यों न अपनी दादी कहे, जिनके जीवन को देखकर ही सबको एक नया जीवन जीने की प्रेरणा मिल जाती।

दादी जी आज सबके मुख पर कुछ प्रेरणास्त्रोत उदाहरणों के रूप में हमेशा विराजमान रहती हैं। अभी जितने भी वरिष्ठ भाई अथवा बहन जिन्होंने दादी का सानिध्य पाया है, बात-बात में उनके मुख से दादी के लिए सम्मान और महानता के बोल निकलते हैं। उनकी मेधा की परख तो इसी बात से लगाई जा सकती है कि उन्होंने इच्छाओं को, जो दुनिया की सबसे असहज स्थिति है, को पार किया। वे कहतीं, इच्छा चीज़ ही ऐसी है, जो अच्छा है उसे बुरा बना देती है। मनुष्य इच्छा करता है कि मैं अच्छा बनूँ, यह इच्छा भी अच्छा बनने नहीं देती। दादी कहती थीं कि यदि आपको अच्छा का ज्ञान है तो अच्छा नैचुरल बनना चाहिए न कि इच्छा से। मनुष्य इच्छा करता है कि सभी उसे सम्मान दें, प्यार करें और उसके कहने पर चलें, लेकिन इच्छा से सबकुछ नहीं मिलता, हमें वैसी ही अपनी दृष्टि और वृत्ति बनानी पड़ती है। दादी हमेशा दृष्टि, वृत्ति और कृति पर काम करती थीं और कहती थीं कि ये वो चीज़ें हैं जो किसी को नज़र नहीं आतीं लेकिन सेवा का विस्तार इसी से है। यदि हम सभी को प्यार की दृष्टि से देखेंगे तो सभी से प्यार मिलेगा। दादी हमेशा कहती थीं कि जो इस लोक की चिंता करता है वो परलोक का सुख कभी ले नहीं सकता। इसलिए इस लोक को हमें पूरी तरह से भूलना है, लोक लाज को छोड़ना है, तभी परमात्म आँचल का सुख मिलेगा। मुख्य प्रशासिका के तौर पर व्यस्तताओं के बावजूद स्वयं का पुरुषार्थ बनाये रखना और आत्मोन्नति बनाये रखना किसी साधारण व्यक्ति के वश की बात नहीं! दादी की मेधा इस कदर प्रखर थी कि संस्था के सिद्धांतों के अनुरूप कभी किसी के समक्ष हाथ नहीं फैलाया। वह कहतीं, इस बात पर ही तो निश्चय चाहिए, कि कराने वाला अपने आप ही हमसे करवायेगा।

दादी हमेशा दृष्टि, वृत्ति और कृति पर काम करती थीं और कहती थीं कि ये वो चीज़ें हैं जो किसी को नज़र नहीं आतीं लेकिन सेवा का विस्तार इसी से है। यदि मैं सभी को प्यार की दृष्टि से देखूंगी तो सभी से प्यार मिलेगा। दादी हमेशा कहती थीं कि जो इस लोक की चिंता करता है वो परमात्म सुख कभी ले नहीं सकता।

उनकी विवेक शक्ति का एक अनुपम उदाहरण है कि दादी जी ने 16 प्रभागों का गठन किया। जिसमें प्रमुख रूप से शिक्षाविद, युवा, स्वास्थ्य, व्यवसाय, समाज सेवा आदि-आदि शामिल हैं। आज उन्हीं प्रभागों के अंतर्गत अध्यात्म का समन्वय व शोध हो रहा है। यह हमारा व्यक्तिगत अनुभव है कि दादी किसी को भी असंतुष्ट होकर नहीं जाने देती थीं। 2005 में दादी जी को एक बार हम मिलने गये। उसी समय दादी मुरली क्लास से आये थे। अभी बाहर खड़े कुछ भाई बहनों से मिल रहे थे। हम जैसे ही आगे बढ़े तो उनके सेवाधारी भाई बहनों ने हमको रोका। दादी ने जैसे ही हमें देखा तो उनको हटाकर हाथ से इशारा किया। हमें दादी का फोटो लेना था तो दादी ने बड़े प्यार से फोटो खिंचवाया और दृष्टि दी। हमें उस सयम दादी की अहमियत उतनी पता नहीं थी क्योंकि हम बिल्कुल नये थे। आज वे सारे दृश्य जब सामने आते हैं तो दिल खुश हो जाता है।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

दादी जी मेधावी थीं ना, इसलिए उनमें विवेक व भावना का संतुलन था। वे कहती थीं जिस घर में ज़्यादा मेहमान आते हैं, वह घर सबसे अधिक सौभाग्यशाली होता है। वे मेहमान भगवान के बच्चे हैं, पवित्र आत्माएं हैं व इस धरा की अनेक महान विभूतियां हैं। हमें इन मेहमानों की पूरी खातिरदारी करनी चाहिए। वे सच्ची कर्मयोगी थीं, सारे दिन कर्म करके वे ऐसी दिखतीं जैसे कुछ किया ही ना हो। जब जब उनकी चर्चा होती है, लोग उनके किये गये कृत्यों व धारणाओं का ही बखान करते हैं। आज हम छोटे ब्रह्माकुमार कुमारी भी दादी जी का गुणगान करते नहीं थकते। हम तो जब उनके बारे में कुछ लिखते हैं तब भी अपने आप को महान सौभाग्यशाली समझते कि ऐसी महान विभूति के लिए हमारी कलम, हमारी लेखनी उनके द्वारा किये गये कर्मों को लिपिबद्ध कर रही है। इस असार संसार में रहते हुए उन्होंने इस जगत को वो दिया जो एक साधारण मानव की सोच से परे है। हम भी उनके पदचिन्हों पर पूर्णतया चलने की कोशिश करते हैं और करते रहेंगे। वैसे भी दादी कहती थीं कि मैं कुमारों की कुमारका हूँ, तो आज हमें इस बात का भी गर्व होता है कि हम सारे कुमार हैं और हम ऐसे के सानिध्य में हैं जो परमात्मा की अनुपम छवि हैं।

उपलब्ध पुस्तकें

देखिए 'अपना DTH' में फ्री 24 घंटे 'पीस ऑफ माइंड चैनल' ...उसके साथ 100 अन्य चैनल भी फ्री
अपने डी.टी.एच. डिश के डायरेक्शन का करें परिवनर्तन...
Satellite Position = 75° East, Satellite = ABS-2
LNB Frequency = 10600/10600, Frequency = 12226/12227
Polarization = H, Symbol = 44000
System = MPEG-2(DVB-S) / MPEG-4(DVB-S2)
FEC = 3/4, 22K = On/Auto, Mode = All/FTA
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें...
8104777111/7014140133

मन की बातें

राजयोगी - ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न:- मेरा जीवन बहुत व्यस्त है, मुझे अनेक काम करने पड़ते हैं। मैं चाहता हूँ कि मेरा जीवन योग-युक्त बने, परन्तु कार्य की अधिकता सफल नहीं होने देती, मैं क्या करूँ?

उत्तर:- मनोवैज्ञानिकों ने 'काम' व 'खेल' की परिभाषाओं में अन्तर बताया है। 'काम' वह है जो हमें करना पड़ता है और 'खेल' वह है जो हम खुशी से करते हैं। बस अगर कार्य को खेल बना दिया जाए तो हमारे कार्य सहज हो जाएँ।

एक समर्पित कुमार का ऐसा ही जीवन था। रात-दिन स्टेशन पर तथा हवाई अड्डे पर जाना पड़ता था। कहता था - बहुत व्यस्त हूँ, क्या करूँ? उसे युक्ति बताई गई कि जब भी कहीं जाओ, उससे पूर्व एक, दो या तीन मिनट बाबा के कमरे में योग करके जाओ और बीच में रिक्शा या कार में बैठे हुए भी इधर-उधर न देखकर, योग का अभ्यास ही करो और उसने यही किया। इस प्रकार प्रतिदिन उसका दस बार बाबा के कमरे में जाना हुआ। उसने अपने अनुभव इस प्रकार सुनाये :-

'अब स्टेशन पर आरक्षण के काम सहज हो गये, बाबू लोग प्यार से व सम्मान से कार्य करने लगे, जैसे कि मेरा इन्तज़ार ही करते रहते हों। सब कार्य मानो स्वतः ही होने लगे। यह थी करन-करावनहार परमपिता की कमाल। इस प्रकार मेरा जीवन एक मास में ही आनंद से भर गया। मानसिक व शारीरिक थकान, चिड़चिड़ापन सब समाप्त हो गया'।

पहले जब मैं रात्रि देर से आता था, तो भोजन नहीं होता था, या ठण्डा मिलता था तो गुस्सा आता था। परन्तु अब मन इतना प्रसन्न रहने लगा कि जो भी मिलता है, उसी में आनंद अनुभव होता है। हवाई अड्डे तक आने-जाने में दो घण्टे लगते हैं। अब मैंने इन दो घण्टों को तपस्या का समय समझ लिया, इसा-लिए अब मुझे ऐसा लगता ही नहीं कि मैं योग मिस करता हूँ। इसी सम्बन्ध में मैं अपना एक अनुभव वर्णन करना चाहता हूँ। ऐसे तो मैं प्राय: अकेला ही हवाई अड्डे पर किसी को लेने जाया करता था, और जब आता था, तो थकान महसूस होती थी। एक दिन कोई दूसरा व्यक्ति हवाई अड्डे पर जा रहा था। उसने मुझे कहा -'चलो मेरे साथ' और मैं घूमने के संकल्प से उसके साथ चल दिया। दो घण्टे में जब हम लौटे तो मैं अपने को बहुत फ्रेश व खुशी में अनुभव कर रहा था। अब मेरा विचार चला कि इस तरह जब मैं किसी को लेने जाता हूँ तो उस समय मैं बहुत थकान महसूस करता हूँ और आज इतने समय में मैं स्वयं को बहुत फ्रेश अनुभव कर रहा हूँ। तो मेरी समझ में आया कि रोज़ मैं इसे काम समझता था और आज मैंने इसे घूमने जाना समझा। तो स्मृति के अन्तर से अनुभवों में अन्तर आ गया।

इस प्रकार यदि प्रत्येक कर्म से पूर्व हम थोड़ा भी योग-युक्त होने का अभ्यास करें और कर्म को सहज भाव से खेल की तरह करें तो व्यस्त जीवन भी खेल बन जाए और योग-युक्त स्थिति भी सहज बन जाए।

प्रश्न:- मैं एक गृहस्थी माता हूँ। पाँच वर्ष से योग-अभ्यास कर रही हूँ। मेरे परिवार के सभी सदस्य ज्ञान-मार्ग पर चल रहे हैं। सभी का पूर्ण सहयोग है। मैं चाहती हूँ कि मेरे घर का वातावरण शक्तिशाली बने। क्या विधि अपनाऊँ?

उत्तर:- आप तो पद्मापद्म भाग्यशाली हैं जो सारा परिवार दैवी परिवार है। आप स्वयं घर की मालिक हैं। कुछ सुझाव हैं और कइयों ने इन्हें अपनाकर घर के वातावरण को श्रेष्ठ बनाया है। आप भी दृढ़ता से इनका पालन करें। 1. रोज़ सवेरे उठकर सभी एक साथ बैठकर योग करें। 2. सारा घर का कार्य आपको ही करना होता है तो भिन्न-भिन्न कार्य शुरु करने से पूर्व दो-दो मिनट योग करें। 3.हर घण्टे ईश्वरीय प्यार में मग्न करने वाला एक गीत बजायें। अपने घर के कुछ नियम अवश्य बनायें क्योंकि अब आपका घर मंदिर है और घर में आने वाले मेहमान भी उन नियमों का पालन करें। 4.भोजन का भोग अवश्य लगायें।

5. शाम को या रात्रि को सोने से पूर्व किसी भी समय सभी साथ बैठकर मुरली पढ़कर उस पर चर्चा करें।

6. सोने से पूर्व सभी इकट्ठा बैठकर 15 मिनट योग करें।

इसके अतिरिक्त आप हफ्ते में एक दिन अपनी व्यक्तिगत भट्ठी अवश्य करें। उसमें हल्का भोजन हो, कम बोलना हो, हो सके तो मौन व्रत हो, पढ़ना-लिखना व योग-अभ्यास शामिल हो। इसमें यदि पूरा परिवार सहयोग दे तो अति उत्तम। इससे घर का वातावरण योग-युक्त व शक्तिशाली बनेगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

आध्यात्मिक क्रान्ति की अगुआ दादी प्रकाशमणि के साथ विश्व में अध्यात्म की पताका फहराने वाले सहयोगी व साथी बायें से मनोहर इन्द्रा दादी, गंगे दादी, रतनमोहिनी दादी, हृदयमोहिनी दादी, जानकी दादी, प्रकाशमणि दादी, निर्मलशांता दादी एवं चन्द्रमणि दादी समूह चित्र में।

पवित्रता की अनुपम डोर-राखी

रक्षाबंधन का त्योहार भारत के प्रमुख त्योहारों में से एक है। चिरातीत काल से ही बहनें भाई की कलाई पर श्रावणी पूर्णिमा को राखी बांधती चली आ रही हैं। भाई को स्नेह के सूत्र में बांधने वाला यह एक बहुत ही मर्मस्पर्शी और भावपूर्ण रस्म है। इस दिन बहनें भाई को राखी बांधती हैं और उनका मुख मीठा कराती हैं। 4-10 मिनट की इस रस्म में भारतीय संस्कृति की झलक देखने को मिलती है। यह धागा तो एक दिन टूट भी जाता है, परंतु मन को मिलाने वाले स्नेह के सूक्ष्म सूत्र नहीं टूटते। रक्षाबंधन को केवल कायिक अथवा आर्थिक रक्षा का प्रतीक मानना इस त्योहार के महत्व को कम कर देने के बराबर है। भारत मुख्यतः एक आध्यात्मिकता प्रधान देश है। यहाँ मनाये जाने वाले हर त्योहार आध्यात्मिक पृष्ठ-भूमि को लिए हुए हैं। यदि उसी परिप्रेक्ष्य में देखा जाए तो रक्षाबंधन का भी आध्यात्मिक महत्व है।

भारत में सूत्र सदा किसी आध्यात्मिक मनोभाव को लेकर ही बांधे जाते हैं। दूसरे शब्दों में कहें, सूत्र बांधने की रस्म शुद्ध धार्मिक है और हर धार्मिक कार्य को शुरु करने के समय कुछ व्रतों अथवा नियमों को ग्रहण करने के लिए यह रस्म अदा की जाती है। जब भी किसी व्यक्ति से कोई संकल्प कराया जाता है तो उसे सूत्र बांधा जाता है और तिलक भी दिया जाता है। सूत्र बांधना और संकल्प करना तथा तिलक देना - इन तीनों ही सहचर्य आध्यात्मिक संकल्प का ही प्रतीक है क्योंकि यह रस्म सदा किसी धार्मिक अथवा पवित्र व्यक्ति द्वारा ही कराई जाती है और सूत्र बंधवाने वाला व्यक्ति संकल्प कराने वाले को दक्षिणा भी देता है - इसी का रूपांतर यह `रक्षाबंधन' त्योहार है। यह त्योहार एक धार्मिक त्योहार है और यह इंद्रियों पर विजय प्राप्त करने के संकल्प का सूचक है, अर्थात् भाई और बहन के नाते में जो मन, वचन और कर्म की पवित्रता समाई हुई है, यह उसका बोधक है। पुनश्च, यह ऐसे समय की याद दिलाता है, जब परमपिता परमात्मा ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा कन्याओं-माताओं को ब्राह्मण पद पर आसीन किया, उन्हें ज्ञान का कलश दिया और उन द्वारा भाई-बहन के सम्बन्ध की पवित्रता की स्थापना का कार्य किया, जिसके फलस्वरूप सतयुगी पवित्र सृष्टि की स्थापना हुई। उसी पुनीत कार्य की आज पुनरावृत्ति हो रही है।

यदि ज्ञान की दृष्टि से देखा जाये तो रक्षाबंधन एक बहुत ही रहस्ययुक्त पर्व है। किंवदन्ति है कि इसको मनाने से स्वर्ग की प्राप्ति भी होती है। इसके बारे में एक जगह यह भी वर्णन आता है कि जब असुरों से हारकर इंद्र ने अपना राज्य-भाग्य गँवा दिया था तो उसने भी इंद्राणि से यह रक्षाबंधन बंधवाया था और इसके फलस्वरूप उसने अपना खोया हुआ स्वराज्य पुनः प्राप्त कर लिया था। इसी प्रकार, एक दूसरे आख्यान में यह वर्णन मिलता है कि यम ने भी अपनी बहन यमुना से रक्षाबंधन बंधवाया था और कहा था कि इस बंधन को बांधने वाले मनुष्य यमदूतों से छूट जायेंगे। स्पष्ट है कि ऐसा रक्षाबंधन जिससे कि स्वर्ग का स्वराज्य प्राप्त हो अथवा मनुष्य यम के दण्डों से बच जाये, पवित्रता का ही बंधन हो सकता है, अन्य कोई बंधन नहीं। अब प्रश्न उठता है कि इस त्योहार से इतनी बड़ी प्राप्ति कैसे होती है? इसका उत्तर हमें इस त्योहार के अन्यान्य नामों से ही मिल जाता है। रक्षाबंधन को `विष तोड़क पर्व', `पुण्य प्रदायक पर्व' भी कहा जाता है जिससे यह सिद्ध होता है कि यह त्योहार पवित्रता की रक्षा करने, पुण्य करने और विषय-विकारों की आदत को तोड़ने की प्रेरणा देने वाला त्योहार है।

यह वृत्तांत विश्व ज्ञात है कि शिकागो में विश्व धर्म सम्मेलन में जहाँ हर धर्म के प्रतिनिधि श्रोताओं को `प्रिय मित्रों' कहकर सम्बोधित कर रहे थे, तब भारतीय संस्कृति और परम्परा के प्रतिनिधि स्वामी विवेकानंद ने अपने सम्बोधन में कहा था - `प्रिय भाइयों और बहनों' तब वहां का हॉल तालियों से गूंज उठा था और चहुं ओर से आवाज़ आई ``वाह! वाह!'' क्योंकि निश्चित ही बहन और भाई के सम्बन्ध में जो स्नेह है, वह एक अपने ही प्रकार का निर्मल स्नेह है जिसकी दूसरी कोई मिसाल नहीं! इसमें एक विशेष प्रकार की आत्मीयता का भाव है, एक निकटता है और एक-दूसरे के प्रति एक हित की भावना है। ``प्रिय बहनों और भाइयों'' - इन शब्दों में वहां के विश्व धर्म सम्मेलन के श्रोताओं ने सब प्रकार के झगड़ों का हल निहित महसूस किया था। बहन और भाई के निर्मल स्नेह का स्वरूप इस त्योहार का मूल है, लेकिन आज वे अपने आदि स्थान भारत से प्रायः लुप्त होते जा रहे हैं। अतः आज के संदर्भ में राखी की पुरानी रस्म के बजाय एक नये दृष्टिकोण से इस त्योहार को मनाने की ज़रूरत है। दूसरे शब्दों में कहें तो, अर्थ-बोध के बिना राखी मनाने के बजाए अब राखी के मर्म को जानकर इसे मनाते हुए, वातावरण को बदलने की आवश्यकता है, तभी इसकी सार्थकता सिद्ध होगी।

इनकी नज़रों से दादी जी...

दादी ने सिखाई बोलने की कला

दादी जी को जब मैं कहती थी कि मुझे यह कार्य नहीं आता तो दादी जी कहतीं कि बाबा और दादी को आपमें विश्वास है, आप कर लेंगी। यह विश्वास सदा ही मुझे प्रेरणा देता रहता है। एक बार मैंने दादीजी से पूछा कि अभी हमारे पास ज़्यादा स्थान की सुविधा नहीं है तो अधिक आत्माओं को नहीं बुलाना चाहिए, तो दादी ने कहा कि ये बाबा का घर है। यदि दिल बड़ा हो तो सबकुछ संभव है। दादीजी ने ही मुझे बोलने की कला सिखाई। दादीजी की बोलने की कला बहुत ही प्रभावशाली और स्पष्ट होती थी। दादी कभी भी किसी कार्य के लिए नहीं कहतीं कि यह कार्य दादी ने किया, वे सदा कहतीं कि यह सब बाबा का कमाल है। दादी जी के मुझपर अटूट विश्वास ने मुझे स्वयं पर तथा अपने ब्राह्मण जीवन पर विश्वास करने में मदद की।

- ब्र.कु. शशिप्रभा, कोऑर्डिनेटर, स्पोर्ट्स विंग, माउण्ट आबू

दादी जी ने बनाया राजयोग प्रशिक्षिका

हमें शुरु से ही दादी जी की पालना मिली। सन् 1975-85 के दौरान राजयोग शिविर कराने हेतु मुझे दादी जी ने विभिन्न राज्यों में भेजा। समर्पण जीवन के 22 वर्षों तक मैं सेवाकेन्द्रों पर रहकर सेवा करती रही। सन् 1993 से मुख्यालय में दादीजी के पास रहकर सेवा करने का मौका मिला। दादी जी यज्ञ की निश्चित हुई दिनचर्या का खुद भी ध्यान रखती थीं और कोई भी मीटिंग करते हुए यज्ञ सेवाधारियों का भी ध्यान रखती थीं। दादीजी सदा कदम-कदम मेरे साथ रहती हैं और जीवन भर रहेंगी।

- ब्र.कु. गीता, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, माउण्ट आबू

कितना विशाल दिल

आदरणीय दादी प्रकाशमणि हमारे लिए एक ममतातयी माँ के रूप में थीं। वे बहुत ही रहमदिल थीं, उनके नयनों में सभी के लिए सदा प्यार छलकता रहता था। चाहे वो छोटे से छोटा व्यक्ति हो या कोई बड़ा वी.आई.पी. हो या बाबा का बच्चा हो। वे टीचर्स का गुणों और शिक्षाओं से श्रृंगार करने में प्रवीण थीं। एक बार डायमंड हॉल में टीचर्स की भट्ठी में हज़ारों की बड़ी सभा में दादी जी ने खुले दिल से टीचर्स को कहा कि बहनों यदि आपको कुछ तकलीफ हो या आपको कुछ भी चाहिये तो मुझे आकर कान में कह दो, मैं दे दूंगी। बाबा का घर सो अपना घर है। ये सुनकर मेरे आँखों से आंसू छलक आये। मुझे अनुभव हुआ कि दादीजी का दिल कितना विशाल है, माँ का दिल है, कितना अपनापन है। **- ब्र.कु. हेमलता, समन्वयक, इन्दौर क्षेत्र**

दादी की सेवाभाव का दृश्य अभूल है

1992 में दादी जी का पूरा दिन अति व्यस्तता में बीता। दादीजी ट्रेन का सफर करके नागपुर पहुँचे। उन दिनों रास्ते इतने अच्छे नहीं थे। खुरदरे रास्तों का सफर करते हुए दादीजी रात को हमारे पास पहुँचे। करुणामयी दादी जी अपने आराम, भोजन का संकल्प ना करते पहले भाई बहनों से मिलती थीं, फिर भी सुबह 4 बजे दादीजी योग में ही मिलतीं। अकोला सेंटर में पुष्पा दीदी के पाँव पर गलती से उबलता पानी गिर गया, तब दादी ने एक स्नेहमयी माँ के रूप में बहुत ही प्यार से अपने हाथों दीदी का घरेलू इलाज किया। वह दृश्य देख मेरा हृदय गदगद् हो रहा था। ऐसी प्यारी, अथक सेवाधारी, त्याग मूर्ति के पुण्य स्मृति दिवस पर मेरा कोटि कोटि प्रणाम। **- ब्र.कु. रजनी, नागपुर क्षेत्र**

इनकी नज़रों से दादी जी...

दादी हमारी भाग्यविधाता

मैं स्कूल की छुट्टियों में मधुबन आ जाती थी। दादी जी हमेशा मुझे कहती थीं कि दादी की नज़र तुम पर है और उस नज़र ने मुझे हमेशा उनके करीब रखा। जब 'ओम शांति भवन' में हम दोनों बहनें अव्यक्त बापदादा से मिलने गये तो दादीजी एवं सभी वरिष्ठ भाई-बहनें चाहते थे कि हम कॉलेज की पढ़ाई न पढ़कर ईश्वरीय सेवाओं में अपना योगदान दें, जबकि हमारी इच्छा थी कि हम आगे पढ़ाई करें। ऐसे में अव्यक्त बापदादा ने कहा कि पढ़ाई की ज़्यादा ज़रूरत नहीं है, आप सेवा में लग जाओ। किंतु दादी जी का विश्वास था कि ये पढ़ाई पूरी करके सेवा में लग जायेंगी, तब बाबा ने भी इज़ाज़त दे दी। तब से लेकर आज तक मैं गामदेवी सेवाकेन्द्र पर अपनी सेवायें दे रही हूँ। मुझे गामदेवी सेवाकेन्द्र पर जाने के बाद पता चला कि यह तो दादीजी की खुद की सेवा की कर्मभूमि है। **– ब्र.कु. निहा, गामदेवी क्षेत्र, मुम्बई**

जब मिला मुझे किसी महान आत्मा का सहारा

सन्1992 में मैं बच्चों का ग्रुप लेकर मधुबन गई। 20-22 बच्चों के ग्रुप में कुछ बच्चों के वापसी टिकट नहीं थे। मैं इसके लिए ओमप्रकाश भाई जी से मिलती और पूछती। निकलने से एक दिन पहले भी टिकट कनफर्म नहीं हुई थी। भाई जी ने मुझे तसल्ली देते हुए कहा कि हो जायेगा। रात्रि भोजन के बाद मैं रेलवे टिकट ऑफिस से बाहर गलियारे से किचन भण्डारे की तरफ जा रही थी, कि तभी दादी जी रास्ते में मिल गई। दादी ने मुझसे पूछा कि कहाँ से आई हो, कितने बच्चे आये हैं, सबकी टिकट हो गई है? टिकट हो गई है - यह सुनते ही लगा जैसे अब सब ठीक हो जायेगा। मैंने सारी स्थिति दादी को बताई तो उनका अपनत्व तथा प्यार भरे शब्दों में तसल्ली देना कि अच्छा, मैं ओम प्रकाश से बात करूंगी, तो दो दिन से जो चिंता थी कि कैसे इतने बच्चों को बिना टिकट ले जाऊंगी, वो दादी से मिलकर कहाँ लुप्त हो गई ये पता ही नहीं चला। जब भी दादी जी की ऐसी कुछ बातें याद आती हैं, ऐसा लगता है जैसे दादी जी दिनचर्या में सर्व की परेशानियों को, उलझनों को सुलझाते, सबकी दुविधा को मिटाते, बाप समान फरिश्ता रूप प्रत्यक्ष करते जा रहे थे। **– ब्र.कु. प्रभा, डिफेन्स कॉलोनी, दिल्ली**

जुड़ी हुई कोई भी चीज़ व लोग मुझे खुशी नहीं दे सकते

गतांक से आगे...

प्रश्न:– हमने अपनी खुशी का आधार दूसरों को बना रखा है, तभी तो कोई भी आता है और हमारे दिल को खराब करके चला जाता है।

उत्तर:– लेकिन हमें अपना ध्यान रखना है। आज लिस्ट बनाकर देखते हैं। जब हम 'स्व परिवर्तन' की यात्रा पर हैं तो थोड़ा-थोड़ा होमवर्क भी अपने साथ करते जाएं। हम क्या करें, एक है कि हम सुन रहे हैं, सुनते-सुनते कह रहे हैं हाँ, अच्छा है, सुनते-सुनते ये भी सोचते हैं कि ठीक ही तो है ना, आसक्ति है तो उसे छोड़ देना चाहिए। लेकिन इसके ऊपर आपको थोड़ा सा मेहनत करना पड़ेगा। आप समय निकालकर अपने साथ बैठें और बातें करें। हमें जितनी बार भी समय मिलता है तो हम टी.वी. के सामने ही जाकर बैठ जाते हैं। समय है लेकिन हम उस समय को किस तरह से उपयोग कर रहे हैं?

प्रश्न:– कई लोग कहते हैं कि समय है तो अब हम क्या करें, हमारे पास कुछ करने को होता ही नहीं है, तब हम ढूंढते हैं कि उस समय हम क्या करें?

उत्तर:– उस समय को अपने लिए उपयोग करें। अब आज या कल नहीं, जल्दी ही अपनी एक छोटी सी लिस्ट बनायें और जैसे-जैसे हम एक-एक आसक्ति लिखते जाते हैं तो हमें जीवन की सच्चाई का पता चलने लगता है। अब हम एक दृश्य की अनुभूति करें कि अगर मेरे जीवन में चाहे वो लोग, चाहे वो वस्तु, चाहे वो पद, कोई चीज़ नहीं है तो मेरा जीवन कैसा होगा? आप थोड़ी देर के लिए उनको जाने दो तो उसके बाद आपको महसूस होगा कि आपका जीवन कैसा चलेगा! अब आप उनके साथ जीवन में रहो लेकिन बिना किसी आसक्ति के, कोई भी चीज़ नहीं जायेगी, न वस्तु जायेंगे, न लोग जायेंगे। नहीं तो वही लोग, वही रिश्ते जिनका उद्देश्य था कि हम खुशी क्रियेट करें उन्हीं सारी चीज़ों के साथ हम जुड़ जाते हैं।

ब्र. कु. शिवानी

प्रश्न:– एक थॉट ही मुझे कितना तनाव देता है या डर होगा या कुछ भी होगा कि जिनके साथ अभी मैं अटैच्ड हूँ, अब हम यह कोशिश करेंगे कि पहले तो हमें यह महसूसता हो कि हम इन चीज़ों के साथ या इन लोगों के साथ अटैच्ड हैं। दूसरी बात कि अब मुझे पता नहीं चल रहा है कि आसक्ति से बाहर कैसे आना है? तो आपने कहा कि उसकी लिस्ट बनाते ही हर आसक्ति के साथ मैं ये कल्पना करूं कि वो मेरे पास नहीं है तब मैं कैसे जी रही हूँ? ऐसा सोच करके ही मुझे दर्द या तनाव महसूस हो सकता है।

उत्तर:– यह प्रमाण है कि यह कितनी गहरी आसक्ति है। उसको धीरे-धीरे मुझे महसूस करना पड़ेगा और अपने-आपको समझाना पड़ेगा कि मुझे खुशी या डर किस बात की होती है कि ये चले जायेंगे तो इनके साथ-साथ क्या जायेगा।

प्रश्न:– मैं अकेली कैसे रहूंगी?

उत्तर:– शारीरिक नहीं, तो मेरी खुशी इनके साथ चली जायेगी। तो जैसे आप उसको मन से छोड़ते हो तो आप उसी तरह यह भी थॉट क्रियेट करो कि मेरी खुशी इन पर निर्भर नहीं है। इनके बिना भी मैं खुश हूँ। इनसे जुड़ी हुई कोई भी चीज़ या कोई लोग मुझे खुशी नहीं दे सकते हैं। और इसी बात का डर हमें सदा परेशान करता है। तो लेट देम गो एण्ड क्रियेट ए थॉट 'आई ऐम स्टील कम्प्लीट... आई ऐम स्टील कम्प्लीट' देन कम बैक आई ऐम कम्प्लीट। अब भले वो मेरे साथ हैं, हम साथ में सबकुछ कर रहे हैं लेकिन मैंने वो क्रियेट कर लिया है कि ये हैं लेकिन मेरी खुशी इनके ऊपर निर्भर नहीं है। फिर अगर कोई कहेगा भी उसके बारे में या कोई टीका-टिप्पणी भी पास होगी तो भी मैं स्थिर रह सकूंगी। यह मेरा स्वयं के बारे में बिलीफ है कि मैं अपना काम बहुत अच्छी तरह से करती हूँ। अब किसी ने आकर मेरे काम के बारे में कुछ टीका-टिप्पणी कर दी तो मैं तुरंत ही दु:खी हो जाती हूँ। क्योंकि मैं वरिष्ठ हूँ। - क्रमशः

कृष्ण के जन्म की पूर्व तैयारी

मनभावन, मनोहर, मोर मुकुट धारी श्रीकृष्ण का आकर्षण आज भी संसार में चिरस्थायी है। कई बार हम कृष्ण के आकर्षण को तो देखते हैं, लेकिन कई जिज्ञासुओं के अंदर यह प्रश्न भी उठता है कि कृष्ण सतयुग में आए या द्वापर में? इन सारे प्रश्नों में सभी उलझे हुए हैं। लेकिन यह बात तो सत्य भी और प्रमाणित भी है कि चाहे सतयुग में आया या द्वापर में आया, लेकिन आया तो धरती पर ही है ना। आप कृष्ण को इस धरती पर देखना तो चाहते हैं, लेकिन क्या ये धरती कृष्ण के जन्म के लायक है? कहते हैं कि वो तीनों लोकों का स्वामी है, तो क्या वर्तमान संदर्भ में जो मानव की स्थिति है, ऐसी स्थिति में पूरे सृष्टि के स्वामी के आने का कोई औचित्य बनता है? हमारे हिसाब से तो वहाँ, जहाँ पर कृष्ण होंगे, उस दुनिया में सतोगुण की प्रधानता होगी। कभी भी अधर्म, दु:ख, और अशान्ति, प्राकृतिक आपदाएँ तथा तमोगुण आदि का नाम-निशान नहीं होगा। उस सर्वोच्च प्रारब्ध को भोगने के लिए सबसे पहले तो हमारे अंदर पूर्णतया देवत्व हो। क्योंकि उनको सम्भालने के लिए उतनी अच्छी स्थिति, उतने ही कृष्ण समान गुणों की प्रधानता होनी चाहिए। अगर आपको ऐसा लोक चाहिए तो कृष्ण की झाँकी के सही अर्थ में जाना चाहिए। अर्थात् हमें अपने अंदर झाँकना है, अपने अवगुणों को परिवर्तित करना है। ऐसा लोक तो सतयुगी लोक ही था क्योंकि सतयुग में ही प्रकृति में भी सतोगुण प्रधान था, सभी मनुष्य भी दिव्य गुण सम्पन्न थे और धन-वैभव भी सभी प्राप्त थे। अत: श्रीकृष्ण का जन्म सतयुग में ही हुआ। इसलिए शास्त्रवादी लोग भी कहते हैं कि श्रीकृष्ण अथवा श्रीनारायण ने सृष्टि के आदि में राजा पृथु के रूप में जन्म लिया और उसने पृथ्वी रूपी गौ को दुहा और इससे सभी वैभव तथा पदार्थ प्राप्त किये। आपने ऐसे भी चित्र देखे होंगे जिनमें कि श्रीकृष्ण को सागर में तैरते हुए पीपल के पत्ते पर चित्रित किया गया होता है। इस विषय में यह भी उल्लेख है कि ''सृष्टि के आदि काल में श्रीकृष्ण को पीपल के पत्ते पर देखा गया।'' वास्तव में उस चित्र का भी भाव यही है कि श्रीकृष्ण ने सतयुग के आरंभ में जन्म लिया था। आप जानते हैं कि संसार को 'सागर' भी कहा जाता है। इस संसार रूपी सागर अर्थात् असीम लोक में मनुष्य सृष्टि मानो पीपल (अश्वत्थ) का एक वृक्ष है। ब्रह्मा और सरस्वती उसके मूल हैं और श्रीकृष्ण उसके पत्ते पर तैर रहे हैं अर्थात् इससे अलिप्त और न्यारे होकर उन्होंने इसमें जीवन व्यतीत किया। पीपल के पत्ते के आकार का भारत खण्ड के मानचित्र के साथ भेंट किया हुआ है। इसीलिए कृष्ण को पीपल के पत्ते पर दिखाया गया है, लेकिन सोचने वाली बात है कि यदि पीपल के पत्ते पर कोई देहधारी लेटे तो क्या वो सागर में तैरता रहेगा? यह सिर्फ प्रतीकात्मक है, जिसकी व्याख्या उपरोक्त लाइनों में की गई है।

अगर आपको ऐसा लोक चाहिए तो कृष्ण की झाँकी के सही अर्थ में जाना चाहिए। अर्थात् हमें अपने अंदर झाँकना है, अपने अवगुणों को परिवर्तित करना है। ऐसा लोक तो सतयुगी लोक ही था क्योंकि सतयुग में ही प्रकृति में भी सतोगुण प्रधान था, सभी मनुष्य भी दिव्य गुण सम्पन्न थे और धन-वैभव भी सभी प्राप्त थे। अत: श्रीकृष्ण का जन्म सतयुग में ही हुआ।

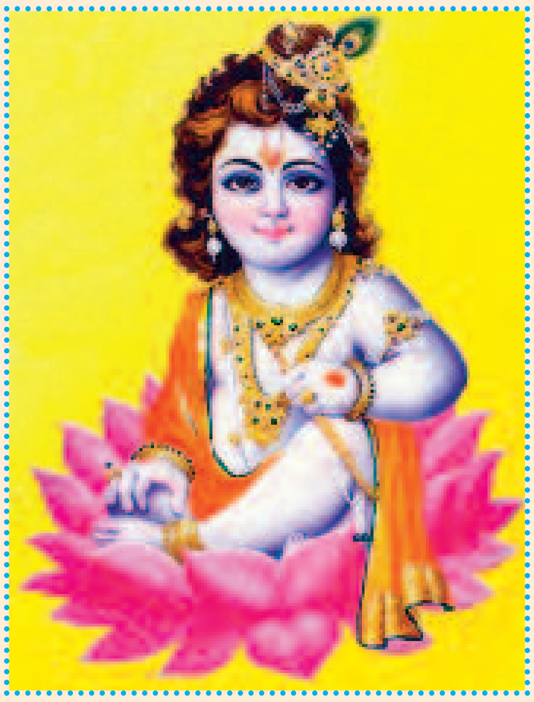

'क्षीर सागर में यही सत्यता सिद्ध है'

आपने देखा होगा कि भारत में ऐसे भी चित्र उपलब्ध हैं और ऐसा भी वर्णन तथा उल्लेख मिलता है जिनमें कि श्रीनारायण, को क्षीर सागर में शेषनाग पर लेटा हुआ अंकित किया गया होता है। इस चित्र का भी अर्थ यही होता है कि श्रीकृष्ण सतयुग के आदि में हुए थे क्योंकि वास्तव में दूध को अति पवित्र वस्तु माना गया है और दूध खुशहाली तथा सम्पन्नता का भी प्रतीक है और 'सागर' शब्द बहुतायत का भी वाचक है और पवित्रता तथा धन-धान्य की बहुतायत तो सतयुग में ही थी। आप जानते हैं कि जब कोई वस्तु अधिक होती है तो मुहावरे में कहा जाता है कि फलां वस्तु का तो यहाँ सागर है। अत: 'क्षीर सागर' या 'दूध का सागर' सम्पूर्ण पवित्रता तथा सुख-समृद्धि का बोधक है और सागर में शेषनाग पर निश्चिंत भाव से लेटना, चित्रकार की भाषा में इस सत्यता का संकेतक है कि श्रीलक्ष्मी और श्रीनारायण सतयुग के सुखकाल में हुए और उनका राज्य निर्विघ्न, निष्कंटक और अति सुखकारी था। ऐसे मनभावन कृष्ण को देखने के लिए सबसे पहले इस धरती को पवित्र बनाना होगा।

कथा सरिता

छोटा सा बदलाव

एक लड़का सुबह-सुबह दौड़ने को जाया करता था। आते-जाते वो एक बूढ़ी महिला को देखता था। वो बूढ़ी महिला तालाब के किनारे छोटे-छोटे कछुओं की पीठ को साफ किया करती थी। एक दिन उसने इसके पीछे का कारण जानने की सोची।

वो लड़का महिला के पास गया और उनका अभिवादन कर बोला ''आंटी नमस्ते! मैं आपको हमेशा इन कछुओं की पीठ को साफ करते हुए देखता हूँ। आप ऐसा किस वजह से करते हो?'' महिला ने उस मासूम से लड़के को देखा और इस पर लड़के को जवाब दिया, ''मैं हर रविवार यहाँ आती हूँ और इन छोटे-छोटे कछुओं की पीठ साफ करते हुए सुख-शांति का अनुभव लेती हूँ। कछुओं की पीठ पर जो कवच होता है उसपर कचरा जमा हो जाने की वजह से इनकी गर्मी पैदा करने की क्षमता कम हो जाती है, इसलिए इन कछुओं को तैरने में मुश्किल होती है। कुछ समय बाद तक अगर ऐसा ही रहे तो ये कवच भी कमज़ोर हो जाते हैं, इसलिए कवच को साफ करती हूँ।

यह सुनकर लड़का बड़ा हैरान हुआ। उसने फिर एक जाना पहचाना सा सवाल किया और बोला ''बेशक आप बहुत अच्छा काम कर रहे हैं, लेकिन फिर भी आंटी एक बात सोचिए कि इन जैसे कितने कछुए हैं जो इनसे भी बुरी हालत में हैं, जबकि आप सभी के लिए ये नहीं कर सकते, तो उनका क्या, क्योंकि आपके अकेले के बदलने से तो कोई बड़ा बदलाव नहीं आयेगा न!''

महिला ने बड़ा ही संक्षिप्त लेकिन असरदार जवाब दिया कि भले ही मेरे इस कर्म से दुनिया में कोई बड़ा बदलाव नहीं आयेगा, लेकिन सोचो! इस एक कछुए की ज़िन्दगी में तो बदलाव आयेगा ही न। तो क्यों न हम छोटे बदलाव से ही शुरुआत करें।

एक रुपया...

एक महात्मा भ्रमण करते हुए किसी नगर से होकर जा रहे थे। मार्ग में उन्हें एक रुपया (एक रुपये का सिक्का) मिला। महात्मा तो वैरागी और संतोष से भरे व्यक्ति थे। भला एक रुपये का क्या करते, इसलिए उन्होंने वह रुपया किसी दरिद्र को देने का विचार किया। कई दिन की तलाश के बाद भी उन्हें कोई दरिद्र नहीं मिला।

एक दिन वे अपने दैनिक क्रियाकर्म के लिए सुबह-सुबह उठते हैं तो क्या देखते हैं कि एक राजा अपनी सेना को लेकर दूसरे राज्य पर आक्रमण के लिए उनके आश्रम के सामने से जा रहा है। ऋषि बाहर आये तो उन्हें देखकर राजा ने अपनी सेना को रुकने का आदेश दिया और खुद आशीर्वाद के लिए ऋषि के पास आकर बोले महात्मन! मैं दूसरे राज्य को जीतने के लिए जा रहा हूँ ताकि मेरा राज्य विस्तार हो सके। इसलिए मुझे विजयी होने का आशीर्वाद प्रदान करें। इस पर ऋषि ने काफी देर सोचा और सोचने के बाद वो एक रुपया राजा की हथेली में रख दिया। यह देखकर राजा हैरान और नाराज़ दोनों हुए, लेकिन उन्हें इसके पीछे का प्रायोजन काफी देर तक सोचने के बाद भी समझ नहीं आया। राजा ने महात्मा से इसका कारण पूछा तो महात्मा ने राजा को सहज भाव से जवाब दिया कि राजन! कई दिनों पहले मुझे ये एक रुपया आश्रम आते समय मार्ग में मिला था, तो मुझे लगा कि किसी दरिद्र को इसे दे देना चाहिए, क्योंकि किसी वैरागी के पास इसके होने का कोई औचित्य नहीं है। बहुत खोजने के बाद भी मुझे कोई दरिद्र व्यक्ति नहीं मिला, लेकिन आज तुम्हें देखकर ये ख्याल आया कि तुमसे दरिद्र तो कोई है ही नहीं इस राज्य में, जो सब कुछ होने के बाद भी किसी दूसरे बड़े राज्य के लिए भी लालसा रखता है। वही एक कारण है कि मैंने तुम्हें ये एक रुपया दिया है।

!! मैले कपड़े !!

जापान में एक शहर है ओसाका। वहाँ शहर के निकट ही एक गाँव में एक विद्वान संत रहा करते थे। एक दिन संत अपने एक अनुयायी के साथ सुबह की सैर कर रहे थे। अचानक ही एक व्यक्ति उनके निकट आया और उन्हें बुरा भला कहने लगा। उसने संत के लिए बहुत सारे अपशब्द कहे, लेकिन संत फिर भी मुस्कराते हुए चलते रहे। उस व्यक्ति ने देखा कि संत पर कोई असर नहीं हुआ तो वह व्यक्ति और भी क्रोधित हो गया और उनके पूर्वजों तक तो गालियाँ देने लगा।

संत फिर भी मुस्कराते हुए आगे बढ़ते रहे। उनपर कोई असर नहीं होते देख वो व्यक्ति निराश हो गया और उनके रास्ते से हट गया। उस व्यक्ति के जाते ही संत के अनुयायी ने उस संत से पूछा कि आपने उस दुष्ट की बातों का कोई जवाब क्यों नहीं दिया, वो बोलता रहा और आप मुस्कराते रहे, क्या आपको उसकी बातों से ज़रा भी कष्ट नहीं पहुँचा? संत कुछ नहीं बोले और अपने अनुयायी को अपने पीछे आने का इशारा किया। कुछ देर चलने के बाद वो दोनों संत के कक्ष तक पहुँच गये। उससे संत बोले, तुम यहीं रुको, मैं अंदर से अभी आया। कुछ देर बाद संत अपने कमरे से निकले तो उनके हाथों में कुछ मैले कपड़े थे। उन्होंने बाहर आकर उस अनुयायी से कहा, 'ये लो तुम अपने कपड़े उतारकर ये कपड़े धारण कर लो। तो शिष्य ने देखा कि उन कपड़ों से बड़ी अजीब सी दुर्गन्ध आ रही थी। तो उसने हाथ में लेते ही उन कपड़ों को दूर फेंक दिया।

संत बोले, अब समझे, जब कोई तुमसे बिना मतलब के बुरा भला कहता है तो तुम क्रोधित होकर उसके फेंके हुए अपशब्द धारण करते हो अपनी मधुर वाणी की जगह। इसलिए जिस तरह तुम अपने साफ सुथरे कपड़ों की जगह ये मैले कपड़े धारण नहीं कर सकते, उसी तरह मैं उस आदमी के फेंके हुए अपशब्दों को कैसे धारण करता। यही वजह थी कि मुझे उसकी बातों से कोई फर्क नहीं पड़ा।

इनकी नज़रों से दादी जी...

दादी के दरवाज़े सदा खुले थे

प्रकाशमणि दादी हमारी पालना के निमित्त बनीं। जब बाबा अव्यक्त हुए, उसी समय मैं सेंटर पर रहने आयी। तो मेरे जीवन में आध्यात्मिक मोड़ लाने वाली, चाहत भरने वाली, बल-शक्ति देने वाली, न्यारा-प्यारा बनाने वाली हमारी प्रकाशमणि दादी ही थीं। उनसे ही हमने सबकुछ सीखा, उन्होंने ही हमारी पालना की।

एक बार भोपाल में भवन का उद्घाटन था। दादी वहाँ आई थीं और मैं भी उनसे मिलने गई हुई थी। अगले दिन सुबह-सुबह हम दादी से मिले बिना ही रायपुर आ गये। उसके बाद जब हमारा मधुबन जाना हुआ तो दादी ने हमसे कहा कि मुझसे मिले बिना ही क्यों चले गए। मैंने संकोच वश अपनी मंसा बताई कि मैं आपकी दिनचर्या को देखते थोड़ा सोचने लगी थी इसलिए आपके कमरे में नहीं आई। तो दादी ने कहा कि नहीं, ऐसा नहीं सोचना, आपको दादी से छुट्टी लेकर ही जाना चाहिए। उसके बाद जब भी हमारा मधुबन जाना होता था तो हम बिना दादी से छुट्टी लिए नहीं आते थे। कभी हमें दादी से संकोच नहीं रहा। मैं अपने से बहुत ही संतुष्ट हूँ कि हमने दादी से भरपूर झोली भरी है। - ब्र.कु. कमला,इंदौर क्षेत्र की निदेशिका,रायपुर

दादी के चेहरे में बाबा का चेहरा दिखाई दिया

एक बार दीदी मनमोहिनी ने ऑलराउंडर दादी के साथ मुझे पाण्डव भवन दिल्ली में सेवार्थ जाने को कहा। तब ऑलराउंडर दादी और मैं बड़ी दादी से मिले और सुनाया कि हम पाण्डव भवन दिल्ली सेवा में जा रहे हैं। तब दादी जी ने बड़े प्यार से छुट्टी दी और बहुत देर दृष्टि देने के पश्चात् कहा कि यह समझदार है, बहुत गम्भीर है, लायक है। उस समय मुझे दादी का चेहरा नहीं दिखाई दे रहा था, साकार बाबा का ही चेहरा दिखाई दे रहा था। मेरे मुख से भी निकला `जी बाबा'। बाल्यकाल में साकार बाबा ने हमारा हाथ पकड़कर बड़े प्यार से दृष्टि दी थी, ऐसा एहसास मुझे बाद में भी कई बार दादी के द्वारा हुआ। दादी जी के ये शब्द कि ये लायक है, मुझे वरदान जैसे लग रहे थे। सचमुच तब से मुझ आत्मा में एक हिम्मत और बल भर गया। एक बार मधुबन में टीचर्स बहनों की भट्ठी में दादी जी पाण्डव भवन के मेडिटेशन हॉल में सब बहनों को रास करा रही थीं। दादी जी जब हमारी सर्कल में आईं तो उन्होंने मुझे गले लगा लिया। वो लवलीन स्थिति और सुखद अनुभूति आज भी मेरे मन-मस्तिष्क में ज़िन्दा है।

– ब्र.कु. पुष्पा,संचालिका,पाण्डव भवन,दिल्ली

दादी की परख शक्ति अचूक

मेरी माँ से दादी ने पूछा कि आप बताओ आपकी कितनी बेटियाँ हैं, तो माता जी ने बताया कि मेरी चार बेटियाँ हैं तो दादी ने कहा कि अब आपकी चारो ही बेटियाँ बाबा के घर में रहेंगी। उनका कहना और हमारा ईश्वरीय सेवार्थ समर्पित हो जाना। इसके अलावा मेरा एक अनुभव और भी है कि-एक बार की बात है मैं मधुबन में थी तो मैंने दादी को देखा तो मेरे मन में आया कि दादी के साथ एक फोटो निकालें। इसलिए मैं दादी को देखे जा रही थी और दादी भी मुझे देख रही थी, फिर उन्होंने देखते-देखते कहा कि आओ आओ। वे समझ गई थीं कि मैं उनके साथ फोटो खिचवाना चाहती हूँ, फिर हमने साथ में फोटो निकलवाया, जिसे आज भी मैंने अपने पास संभाल कर रखा है। तो मैंने यह अनुभव किया कि दादी कैसे हमारे मन के भावों को बिना कहे ही समझ जाती थीं। दादी की जो पालना मिली और उनका प्यार और स्नेह मिला वो अविस्मरणीय है। आज भी मधुबन जाओ तो जैसे चारो ओर उनकी छवि सामने आ जाती है। - ब्र.कु. अविता,सेवाकेन्द्र संचालिका,नरकटियागंज बिहार

इनकी नज़रों से दादी जी...

दादी की माँ के रूप में पालना

हमारी दादी माँ मम्मा के बाद माँ के रूप में पालना देने के निमित्त बनीं। दादी जी निरहंकारी थीं, उसे हम एक अनुभव से बताना चाहेंगे। एक बार किसी कार्यक्रम में गेट पर खड़े भाई ने एसडीएम को कार्यक्रम में अंदर प्रवेश होने नहीं दिया। तो वे काफी नाराज़ हो गये और वहाँ एक बहस का वातावरण बन गया। तभी वहाँ से दादीजी गुज़र रही थीं। उन्हें जब इस बात का पता चला तो उन्होंने एसडीएम से बड़े प्यार से सम्मान पूर्वक बात की और उस गेड पर खड़े भाई की तरफ से माफी मांगते हुए उन्हें अंदर चलने को कहा। एसडीएम को जब पता चला कि वे इस संस्था की मुख्य प्रशासिका हैं तो वह उनके समक्ष नतमस्तक हो गया। दादीजी नम्रता व प्रेमपूर्ण व्यक्तित्व से सबको अपना बना लेती थीं।

ब्र.कु. चक्रधारी, अध्यक्षा, महिला प्रभाग

अति व्यस्तता के बावजूद दादी का पुरुषार्थ पर अटेंशन था

दादी जब जब बाबा को याद करने बैठती थीं तो उन्हें स्वयं को देह से या अन्य बातों से न्यारा करना नहीं पड़ता था, नैचुरल सदा न्यारी ही रहती थीं। दादी हमेशा कहती कि बाबा बैठा है, खड़ा है, करनकरावनहार है, तो बाबा बाबा करके उन्होंने कभी समझा ही नहीं कि मैं कर रही हूँ। दादी ज्ञान और योग के लिए स्पेशल टाइम देती थीं। दिन में कई बार मुरली पढ़ना, अमृतवेला करना। दादी कारोबार करते भी अपनी पढ़ाई और तपस्या पर पूरा ध्यान देती थीं। जैसे अंग्रेजी का शब्द है हार्मनी (सद्भावना) तो दादी कहती थीं कि हार मानी और बात सुलट गई। दादी झुकना जानती थीं, उनमें लचीलापन बहुत था। उनके स्नेही स्वरूप और लचीलेपन के कारण कभी किसी कार्य में गतिरोध पैदा नहीं हुआ। उनको हर घड़ी यही लगता था कि बाबा का कार्य है और बाबा का कार्य होना चाहिए।

- ब्र.कु. सुषमा, जयपुर क्षेत्र प्रभारी

दादी जी में परखने की शक्ति विशेष थी

ज्ञान में आने के बाद तो दो मास के अंदर ही मैं मधुबन गई और पहली बार दादीजी से मिली तो दादी ने पूछा, तेरा लक्ष्य क्या है, तुम क्या बनना चाहती हो? तो मैंने कहा कि मुझे तो आपके जैसा बनना है। मैं तब गले और कान में गहने पहने हुए थी तो दादी ने कहा कि तू मेरे जैसी कैसे बनेगी, तूने तो यह सारा पहन के रखा है। तो मैंने उसी घड़ी गहने उतार कर दादीजी को समर्पित कर दिया और कहा कि मुझे तो आपके जैसा बनना ही है। दादी ने कहा `पक्का' ? मैंने कहा बिल्कुल पक्का। फिर लौकिक घर गई तो पिताजी से मैंने कहा कि मुझे तो भगवान मिला है और मैं दादीजी से वादा करके आई हूँ कि मुझे अभी दादी जैसा ही बनना है। जैसे ही यह बात कही तो उन्होंने सेकण्ड में मान ली। तो यह मेरा पहला अनुभव था कि दादीजी की परख शक्ति व निर्णय शक्ति श्रेष्ठ थी, जैसे कि किसी भी भावी को जानती हों।

एक बार दादी ने मुझसे पूछा, कुसुम चंद्रपुर में मेला हुआ है? मैंने कहा नहीं दादीजी अभी तो वहाँ छोटा सा किराये का मकान है, बड़ा लेंगे तब मेला करेंगे। दादीजी ने कहा नहीं तुम्हें इसी वर्ष मेला करना है। दादी जी की आज्ञा और हमारा करना। जिसमें ही सफलता समाई हुई थी। अच्छी सेवा हुई और उस क्षेत्र में जन जन तक ईश्वरीय संदेश पहुँचा। मैंने सदा अनुभव किया कि बाबा की सेवा के लिये दादी हमेशा तत्पर रहती थीं। **– ब्र.कु. कुसुम, राष्ट्रीय संयोजिका, कला संस्कृति प्रभाग, चंद्रपुर**

जीवन में पहले समझ, उसके आधार से पुरुषार्थ

गतांक से आगे...

दुनिया में कई लोग पूछते हैं कि पुरुषार्थ बड़ा कि प्रालब्ध बड़ी? दोनों में एक भी बड़ा नहीं है यदि बुद्धि ही न हो। स्थिति वैसी की वैसी ही रहेगी। इसीलिए भगवान आकर के सबसे पहले, माया ने जो बुद्धि का अपहरण किया है, वो बुद्धि पहले प्रदान करता है, गीता ज्ञान के द्वारा। बुद्धिवानों की बुद्धि प्रदान की है। जो बुद्धि अपहरण हो गयी थी, वो बुद्धि पहले हमें प्राप्त हुई है। उस बुद्धि के आधार से जब हम पुरुषार्थ करते हैं, तो प्रालब्ध परछाई की तरह चलता हुआ पीछे-पीछे आता है। जीवन में सबसे पहले समझ से काम करो। जो पुरुषार्थ करो, वो भी समझ से करो।

अर्जुन फिर प्रश्न पूछता है कि परमात्मा की शरण कौन ग्रहण करता है?

भगवान कहते हैं -चार प्रकार के लोग हैं, जो भगवान की शरण में आते हैं। कौन कौन से लोग भगवान को याद करते हैं, इस दुनिया में? एक तो जो पीड़ित हैं, पीड़ा ग्रस्त हैं - वो भगवान को याद करते हैं क्योंकि पीड़ा की अवस्था में वो समझ सकते हैं कि हमारी पीड़ा हरने वाला, दुःख हरने वाला एक परमात्मा ही है। तो हे प्रभु! मेरा दुःख हरो।

दूसरा कौन याद करता है तो बिज़नेस मैन? जो अर्थार्थी है। अर्थात् जिसको अर्थ से मतलब है, पैसा कमाना है, लोभ की इच्छा है, लाभ प्राप्त करने की भावना है, वो लक्ष्मी पूजन ज़रूर करेगा। तो अर्थार्थी भगवान को याद करते रहते हैं।

तीसरे प्रकार के व्यक्ति जिज्ञासू। जिसमें ज्ञान की जिज्ञासा होती है, वो भगवान को याद करता है। चौथे प्रकार के व्यक्ति ज्ञानी, अध्यात्म को यथार्थ रूप से जानने वाले। वो गुप्त रहस्य को समझना चाहते हैं। इसी लिए जिज्ञासु से श्रेष्ठ ज्ञानी हैं, जो अध्यात्म के आधार पर अपने जीवन में यथार्थ को समझने का प्रयत्न करते हैं। दुनिया में जिज्ञासु बहुत हैं। कई कथाओं में जाओ आपको लाखों की सभा मिलेगी। जिज्ञासु हैं, वे ज्ञान जानना चाहते हैं।

ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

जो ज्ञानी हैं वे गूढ़ रहस्यों को समझने का प्रयत्न करते हैं। इसीलिए वो अधिक मात्रा में नहीं होते। वो कम मात्रा में होते हैं। लेकिन यथार्थ को समझ लेते हैं। ये चार प्रकार के लोग भगवान की शरण को प्राप्त करते हैं और भगवान को याद करते हैं। फिर भगवान कहते हैं - निःसंदेह ये सब श्रेष्ठ भाव वाले ही हैं। परंतु जो परमज्ञानी और परमात्म प्यार में समाया हुआ है वह सर्वश्रेष्ठ है। क्योंकि मैं उसे अत्यंत प्रिय हूँ और वह मुझे अत्यंत प्रिय है।

भगवान के साथ यदि हमारा मन नहीं लगता है, तो उसका कारण क्या है? उसका कारण है कहीं शायद हमें भगवान को प्यार करना नहीं आता है। भगवान के प्रति प्यार नहीं है। इंसानों के प्रति प्यार है, इसलिए इंसान की याद सहज आती है। लेकिन जहाँ भगवान के प्रति प्यार ही न हो तो भगवान की याद कैसे आएगी। तो इसलिए भगवान कहते हैं - सर्वश्रेष्ठ परमज्ञानी वह है, जो मुझे अत्यंत प्रिय है और जिसे मैं अत्यंत प्रिय हूँ। उसे मैं अपने समान मानता हूँ। क्योंकि वह निश्चय बुद्धि होकर मेरी मत में स्थित होते हैं। वो बहुत जन्म के अंत में मेरी शरण में होते हैं। ऐसा महात्मा अत्यंत दुर्लभ है, बहुत कम होते हैं जो परमात्मा की शरण में और परमात्मा की मत पर अपना जीवन चलाने लगते हैं और वो परमात्मा को अतिप्रिय हैं।

भगवान कहते हैं, जिनकी बुद्धि इच्छाओं के द्वारा मारी गई है। वे अपनी इच्छा पूर्ति के लिए देवताओं की शरण में जाते हैं और वे अपने-अपने स्वभाव के अनुसार पूजा के विधि-विधान बनाते हैं, और पालन करते हैं। किंतु वास्तविकता यह है कि ये सारी प्राप्ति मेरे द्वार ही प्रकट होती है। अगर किसी ने धन प्राप्त करने की इच्छा से पूजा की, किसी और ने किसी अन्य मनोकामना को लेकर के किसी न किसी देवी-देवताओं की पूजा की तो भगवान कहते हैं - वो फल को प्रदान करना मेरी ही शक्ति है। मैं ही उसको प्रदान करता हूँ, लेकिन अल्पज्ञ बुद्धि वाले व्यक्ति देवताओं की पूजा करते हैं तो प्राप्त होने वाले फल भी सीमित और क्षणिक होते हैं। वो सदाकाल के नहीं होते हैं। - क्रमशः

दृष्टि और वरदानी हाथ ने जिंदगी बदल दी...

सन् 1995 की दीपावली की पहली सुबह क्लास के बाद ओम शान्ति भवन में मंच पर दादी प्रकाशमणि जी की दृष्टि और हाथ में हाथ थमा तो तन मन में वो अलौकिक शक्तियाँ आ गईं जो आज दिन तक नहीं भूलती हैं और न भूल सकती है। वह क्षण अतीन्द्रिय सुख, अशरीरी तथा सर्वशक्तियों से सम्पन्न था। उस दिन से विश्वास हो गया कि मेरे हाथ में सर्वशक्तिवान का हाथ व उनका साथ है। दादी प्रकाशमणि जी का व्यक्तित्व प्रभावशाली और शक्तिशाली था। उनके जीवन में सत्यता थी इसलिए उनके आगे बाहर का कोई भी व्यक्ति हो या यज्ञ वत्स हो, झूठ नहीं बोल सकता था। उनकी हिम्मत ही नहीं चलती थी। उनके सामने आते ही वह उनकी रुहानी दृष्टि से प्रभावित होकर अपने को बच्चा महसूस करता था। **– ब्र.कु. दिलीप, शांतिवन**

ख्यालों के आईने में...

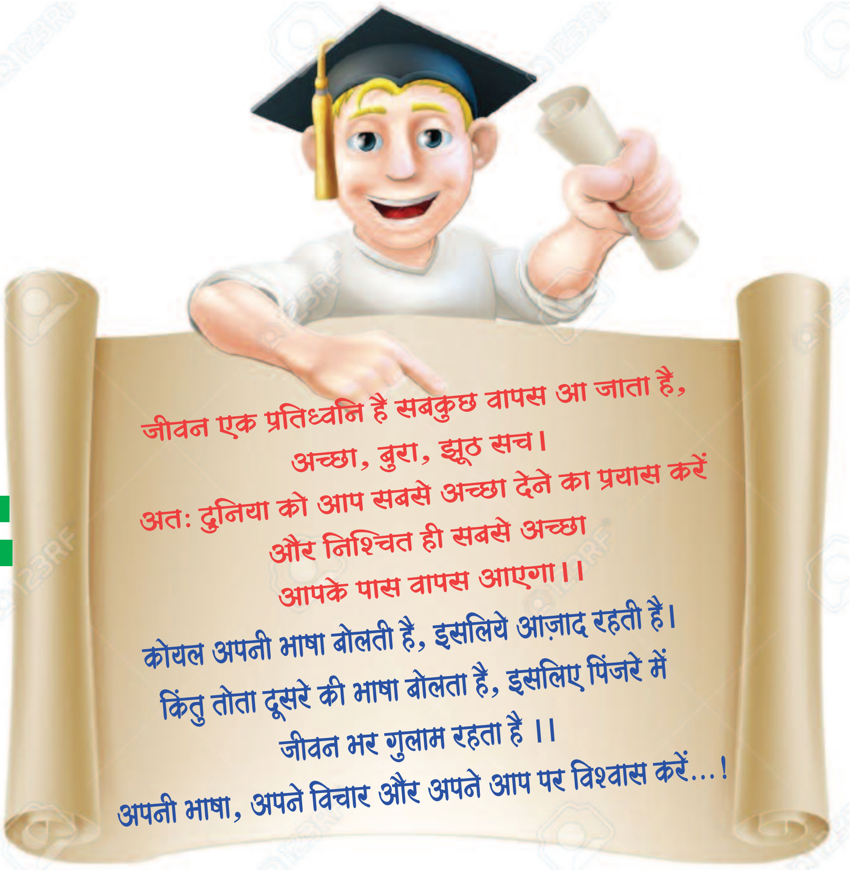

बहुत ही सहज है राजयोग...

'बहुत ही सहज है राजयोग' के पिछले अंक में हमने अभ्यास करने के साथ साथ इस बात पर विचार किया कि किस प्रकार यह योग पतंजलि योग से भी सहज है। इस अंक में हम यह जानेंगे कि यह राजयोग कितना सरल है और कैसे इसे कोई भी करने में सक्षम हो सकता है।

कोई भी कर सकता है राजयोग

अध्यात्म के पथ पर चलना सभी को गंवारा नहीं होता है। उसका कारण है कि सभी इसे समाज से और समाज के लोगों से कटा हुआ महसूस करते हैं। उनका मानना होता है कि हम यदि इस पथ पर चले तो देश और दुनिया से पूरी तरह से अलग हो जायेंगे। इस मान्यता के कारण सभी उन बातों से बहुत दूर हो गये जिसके कारण उनके जीवन में बहुत सारे परिवर्तन आ सकते थे। अध्यात्म, चेतना के स्तर में वृद्धि का दूसरा नाम है, अर्थात् जब आपकी समझ का स्तर बढ़ने लग जाये, आपकी जागरुकता बढ़ने लग जाये, अपने लिए व अपने आसपास के लोगों के लिए या घटने वाली घटनाओं के लिए, तो आप समझें कि मैं कुछ हद तक आध्यात्मिकता की तरफ बढ़ रहा हूँ। इसी को ज्ञान बोला गया, इसी को समझ बोला गया। यही अधर्म में धर्म पर चलने का मार्ग है। इसके आगे राजयोग को अति सरल ढंग से अपने जीवन में कैसे अपनाया जाये, कैसे हर कार्य में इसका सदुपयोग करें, उसके कुछ प्रमुख बिन्दु आपके सामने रखते हैं।

भावार्थ : 1. राजयोग का सीधा अर्थ है कि हम अपने आपके साथ जुड़कर, अपने कर्मेन्द्रियों पर तथा अपने मन पर कैसे राज्य करें। राज्य करने का अर्थ है कि जब जिस कार्य को करना हो हम वही करें, इतनी नियंत्रण शक्ति हो।

2. वैसे भी पाँच ज्ञानेन्द्रियों और पाँच कर्मेन्द्रियों के ऊपर एक मन है जिसे दशेन्द्रिय बोला गया। यदि हमने अपने मन को नियंत्रित कर लिया तो वैसे ही हम राजा बन जायेंगे। इसके बाहर कुछ भी नहीं है। इन्हीं से आप पूरे दिन लड़ते रहते हैं। यही कुरुक्षेत्र है, इसी पर हमें विजय प्राप्त करनी है, जो हम भौतिक दुनिया में रहकर भी कर सकते हैं। जैसे ही हमने विजय प्राप्त की, धर्म की स्थापना अपने आप हो जायेगी।

इसका प्रयोग कैसे करें?

1. एक उदाहरण से शुरु करते हैं। एक व्यक्ति ने तैराकी सीखी, वो भी पानी के बाहर। लेकिन उसकी परीक्षा कब शुरु होगी जब वो पानी के अंदर जायेगा। वैसे हम हैं, जैसे ही हम परिस्थितियों के बीच जायेंगे तो हमारा ज्ञान, हमारी समझ, हमारी चेतना का स्तर कितना है वो हमें पता चलने लग जायेगा।

2. सर्वप्रथम् हमें मन को सुबह-सुबह कुछ अच्छे सकारात्मक विचारों से भरना है। वो क्या होंगे? सबसे पहले कहना कि मेरा पूरा दिन आज अच्छा जायेगा। साथ ही साथ आज जिससे भी मैं मिलूंगा वो भी बहुत सकारात्मक होगा। इन विचारों को कम से कम मन में दस से पंद्रह बार दोहरायें।

3. बिस्तर का त्याग करते ही उपरोक्त संकल्प करने हैं। इससे आपका मन सकारात्मक ऊर्जा से भरेगा। मन में हम जब अपने आप को सम्मान देना शुरु करते हैं तो मन भी हमें समझना शुरु कर देता है। क्योंकि मन मेरा है, उसे मुझे वही देना है जो मुझे चाहिए।

4. जैसे मैं बहुत अच्छा हूँ/ बहुत अच्छी हूँ, तो मेरा मन इन बातों को धीरे-धीरे स्वीकार करेगा। जैसे ही मैं स्वीकार करता हूँ तो लोग भी मुझे अच्छा देखने लग जायेंगे और आपको पूरी दुनिया प्यार करने लग जायेगी। और मन भी आपको बार-बार याद दिलायेगा कि आप यही हो।

5. आप अपने घर के नौकर को कहते हो कि मेरा फलाने-फलाने स्थान पर, फलाने-फलाने व्यक्तियों के साथ मीटिंग है, तुम इसे नोट कर लो और जहां मुझे पहले जाना है वो याद दिला देना। तो वो आपको समय प्रति समय याद दिलाता रहता है।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-2

1	2	3		■	4			■	5
■	6		■	7		■	■	8	
■		■	■		■	9	10		
■	■	11	■		■	12			■
■	13		14	■	15		■	■	16
17		■	18		■		■	19	
■	20			■	21	■	22		■
23		■	24	25		■	■	26	
27		28	■		■	29			■
■	■	30		■	31			■	■

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

2. यह सृष्टि चक्र....रिपीट होता है (3)
3. समय, अवधि, मौसम (2)
4. दु:ख, तकलीफ (2)
5. सहारा, संबंध, नींव (3)
7. रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को...., आदर सूचक शब्द (3)
8. शक्ल, रूप, बनावट (3)
9. न्योता, आमंत्रण (4)
10. राजन, राज्य करने वाला(2)
11. फूल का अविकसित रूप, अप्राप्त यौवन (2)
13. खतरे से भरा हुआ, भय जनक (5)
14. माया के वश हो कभी भी बाप को....नहीं देना है,तलाक (4)
16. हिस्सा, अंश, बंटवारा (2)
19. इस पढ़ाई से तुम नर से .... बनते हो, विष्णु (4)
21. कुआं, ज़ोर का शब्द, सामूहिक आवाज़ (2)
23. उम्मीद, आसरा, भरोसा (2)
25. दोस्त, मित्र (2)
28. बेल, कोमल शाखा (2)
29. मेहनत, काम, प्रयास (2)

बायें से दायें

1. धनवान, अमीर, ज़मींदार (4)
4. निर्धन, दीन, दरिद्र (3)
6. ताकत, शक्ति (2)
7. गीला, आर्द्र (2)
8. अपूर्ण, अधूरा (2)
9. ....बाबा आ जाओ हमारी जैसी कार में (4)
12. कब्र, समाधि (3)
13. मुस्लिम पैगम्बर, मुस्लिम धर्म गुरु (3)
15. मशीन, औज़ार, उपकरण (2)
17. राय, विचार, सलाह (2)
18. शरीर की नस, नाड़ी (2)
19. साँप, विषधर, सर्प (2)
20. रसिया, रसयुक्त (3)
22. सितारा, आकाश में चमकने वाला नक्षत्र (2)
23. आगमन, पधरामणि (2)
24. अभी तुम बच्चों को ज्ञान का....नेत्र मिला है (3)
26. यह है गीता ज्ञान...., जिससे विनाश ज्वाला प्रकट होगी, हवन (2)
27. सम्पूर्ण, सारा (3)
29. सुनना, कान (3)
30. निरंतर बुद्धि की....एक बाप से जुटी रहनी चाहिए (2)
31. शरीर का मध्य भाग, कटि (3)

- ब्र.कु.राजेश,शांतिवन।

आध्यात्मिक जीवन... -पेज 1 का शेष

दादी जी पवित्रता की मूरत

दादी पवित्रता की मूरत थीं। दादी के व्यक्तित्व में जो चुम्बकीय आकर्षण था उसकी शुरुआत ही उनकी पवित्र और स्वच्छ मुस्कराहट से होती थी। दादी जी की उपस्थिति मात्र आसपास की हवाओं पर अपनी रुहानी खुशबू फैला देती थी।

दादी ने हरेक को न सिर्फ परखा बल्कि सराहा भी

दादीजी ने सबके गुणों को परखा और उसी अनुरुप उन्हें सेवायें दीं। उन्हें सबके गुण व कला की ज़बरदस्त परख थी। अंत में शारीरिक अस्वस्थता के कारण भल वे मुख से कुछ बोल नहीं पाती थीं लेकिन उनकी नज़रों में हमें पहचानने के चिन्ह दिखाई देते। आज भी उनके द्वारा सींचे वृक्ष का मीठा फल सर्व आत्माओं को मिल रहा है।

ऐसी हमारी प्यारी दादी प्रकाशमणि, प्रकाश स्तम्भ बनकर आज भी हम सबके साथ और सम्मुख हैं। आज हम उनसे मिली हुई शिक्षाओं को अपने जीवन में धारण कर उनके जैसा बनने की प्रतिज्ञा लेते हैं और यही हमारी तरफ से सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

सफलता की सूक्ष्मता... -पेज 12 का शेष

तीसरा- परमात्मा हमेशा कहते हैं, बच्चे मालिक बन तुम राय दो और बालक बन स्वीकार करो। तो हम बालक, मालिक हैं - इसका भी पूरा बैलेंस चाहिए। इसलिए मालिक बन राय दिया फिर बालक बन गये। नहीं तो आता कि मेरी तो राय मंज़ूर नहीं हुई, यह क्या हुआ, आगे तो मैं राय नहीं दूंगी, यह है इच्छा अथवा सूक्ष्म-अभिमान।

थैंक्स बाबा, शुक्रिया बाबा

आप सब को प्रैक्टिकल अनुभव होने चाहिए कि आपको परमात्मा ने चोटी से खींचकर अपना बनाया है, अब सिर्फ देही-अभिमानी होकर रहना है, यही पद का आधार है। जिन्हों को थोड़ा देह-अभिमान आया, मैं ऐसा हूँ, वैसा हूँ... ऐसे देह-अभिमान वाले ठहर नहीं सकेंगे। इसलिए सदा ही थैंक्स बाबा! शुक्रिया बाबा! वाह बाबा! वाह बाबा! का गीता गाओ। चाहे जो भी कुछ सफलता होती, बाबा के पास में हमारा रिकॉर्ड है। अगर आप कहते मैंने इनको ज्ञान दिया, यह देखो कितना अच्छा है। तो बाबा कहते नहीं, तुमने क्या ज्ञान दिया, मैंने उसकी बुद्धि को टच करके तेरे पास भेजा है। सुखदाता, सबके प्यार का दाता बाबा है।

सफलता का आधार- परमात्मा से सर्व सम्बन्ध

सफलता का आधार है- एक परमात्मा से सर्व सम्बन्धों का प्यार। बाबा के प्यार में लीन रहो तो बाकी सब समस्या समाप्त। कहा जाता मेरे रग-रग, नस-नस में हर मिनट-घड़ी में, बाबा-बाबा, मीठा बाबा...बसता। इसी में रहो तो कभी उदास नहीं होंगे।

अगर कोई पेपर आता है और आप फेल होते हैं तो इसको बाबा कहते तुमने सूक्ष्म इच्छा रखकर यह सब काम किया। कहा जाता तुम एक कदम आगे आओ तो बाबा सौ कदम आगे आयेगा। नहीं तो बाबा भी क्यों आये। तो इसमें बाबा पेपर भी लेता कि देखें कितना नाउम्मीद हुआ। इसलिए यह सब हमारी अवस्था को बढ़ाने के लिए कई प्रकार के पेपर्स आते लेकिन हमें फुल पास होना है। अगर आज एक गुणा सफलता नहीं मिली लेकिन तुम राइट हो तो कल दस गुणा सफलता अवश्य मिलेगी। तो सफलता का आधार है - आप पूरा ही सरेण्डर रहो। बाबा कहता है जितना-जितना तुम मुझे याद करेंगे उतना-उतना तुम्हें सफलता मिलेगी। तो सफलता में भी निश्चय चाहिए। सफलता में त्याग, तपस्या भी चाहिए और इतना ही सूक्ष्म अपनी धारणा चाहिए क्योंकि अब बाबा चाहते हैं कि मेरे बच्चे सभी सम्पन्न बनें।